सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19-20 • अंक 12-01 • मार्च-अप्रेल 2023 • मूल्य : 20 रु.

## दुर्ग (छ.ग.) में प्रतिष्ठा संपन्न रायपुर (छ.ग.) में

# तिरुपातुर नगरे विरती वधामणा

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

संयम वर्ष के 50 वर्ष पूर्णाहूति निमित्ते एवं

## मुमुक्षु समर्थ गुलेच्छा एवं मुमुक्षु सुषमा कवाड़ की

## भागवती प्रवज्या निमित्ते

पावनकारी निश्रा

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा.

आदि श्रमण–श्रमणी वृंद

## पंचान्हिका महोत्सव

में पधारने हेतु

अंतःकरण से निमंत्रण

महोत्सव प्रारंभ

06 JUNE 2023

निवेदक

भागवती दीक्षा

10 JUNE 2023

श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी रतनचन्दजी कवाड़

पारसचन्द पुखराज कवाड़

तिरुपातुर (TN)

## आगम मंजूषा

भगवान महावीर

**सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं।**
**ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो।।**

अपने यश का संरक्षण करने वाला मुनि सुरा, मेरग (महुए की शराब) या अन्य किसी प्रकार के मादक रस का, आत्म-साक्षी से पान न करें।

A monk who is keen to look after his own social prestige should never drink wine. liquor or any such intoxicating substance with his self as a witness.

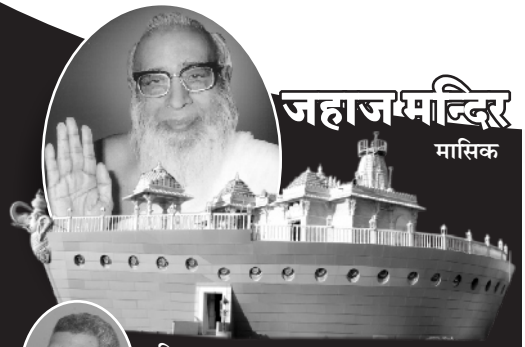


# जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**


वर्ष : 19-20 अंक : 12-1 5 मार्च-अप्रेल 2023 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष - उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन



जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है


**सदस्यता शुल्क**

| | | |
|---|---|---|
| संस्था संरक्षक | : | 21,000 रूपये |
| मानद संरक्षक | : | 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : | 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : | 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : | 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : | 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : | 200 रूपये |

**सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में**
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।


**सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक**

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )
मोबाइल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com


## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. नवप्रभात | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 04 |
| 2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | बेटावद | 05 |
| 3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | भद्रावती नगर | 06 |
| 4. गोत्र इतिहास | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 07 |
| 5. प्रिय आत्मन् | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 08 |
| 6. हंस और केशव | मुनि समयप्रभसागरजी म. | 10 |
| 7. काले कालं समायरे | रमणलाल ची. शाह | 12 |
| 8. समाचार दर्शन | संकलित | 15 |
| 9. संस्था संरक्षक लिस्ट | संकलित | 42 |
| 10. जटाशंकर | आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. | 46 |


### विशेष दिवस

- 5 मार्च श्री सिद्धाचल जी की फाल्गुन फेरी
- 6 मार्च चौमासी प्रतिक्रमण
- 11 मार्च श्री पार्श्वनाथ च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
- 12 मार्च श्री चन्द्रप्रभस्वामी च्यवन कल्याणक
- 15 मार्च वर्षीतप प्रारंभ, श्री आदिनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक, मीनार्क प्रारंभ 06.33
- 19 मार्च चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरि जन्मतिथि, खेतासर मेला
- 20 मार्च पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 22 मार्च नूतन वर्ष विक्रम संवत् 2080 प्रारंभ
- 24 मार्च श्री कुंथुनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 26 मार्च श्री अजितनाथ-संभवनाथ-अनंतनाथ मोक्ष कल्याणक, सज्झाय निक्षेप विधि
- 27 मार्च रोहिणी
- 29 मार्च नवपद ओली प्रारंभ, अस्वाध्याय दिवस
- 30 मार्च श्री सुमतिनाथ मोक्ष कल्याणक, अस्वाध्याय दिवस,
- 31 मार्च गुरु तारा अस्त, अस्वाध्याय दिवस
- 1 अप्रैल श्री सुमतिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 3 अप्रैल श्री महावीर जन्म कल्याणक, महो. समयसुन्दरजी पुण्यतिथि, अहमदाबाद
- 5 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 6 अप्रैल नवपद ओली समाप्त, सिद्धाचल यात्रा, श्री पद्मप्रभस्वामी केवलज्ञान कल्याणक, अस्वाध्याय दिवस

**विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407**

# नवप्रभात

एक व्यक्ति बहुत देर से अपनी घडी खोज रहा था। उसने अपने तीनों कमरे छान मारे। मगर घडी नहीं मिली। वह उस घडी को हर हाल में पाना चाहता था। घडी बहुत कीमती नहीं थी, पर उसके अपने प्रिय और उपकारी व्यक्ति की ओर से मिला हुआ यह उपहार था। वह किसी भी कीमत पर उसे खोना नहीं चाहता था। वह बहुत उदास हो गया।

तभी गली के चार लडके वहाँ आये और पूछा- चाचाजी! आप क्या खोज रहे हैं और उदास क्यों बैठे हैं!

उसने कहा- तुम मेरा सहयोग करो। मेरी घडी खो गई है। मुझे याद नहीं आ रहा है कि मैंने उसे कहाँ उतारा था! जहाँ-जहाँ संभावनाऐं थी, सब जगह मैंने देख ली, पर घडी नहीं मिली।

बच्चों ने पूरे घर को फटाफट टटोल लिया, पर घडी नहीं मिली।

तभी एक पूर्व परिचित युवक ने प्रवेश किया। उसने पूछा- क्या खोज हो रही है!

उदास स्वर में गृह मालिक ने कहा- मेरी घडी नहीं मिल रही है। उसे ही खोजा जा रहा है। तुम खोज सको तो खोजो।

उसने पल भर के मौन के बाद कहा- घडी मैं खोजता हूँ। पर मैं अकेला ही काम करूँगा। बाकी सभी को घर से बाहर जाना होगा।

वह धीरे-धीरे एक-एक कक्ष में जाने लगा। जब वह बाहर आया तो उसके हाथ में घडी थी।

सभी आश्चर्यमिश्रित आनंद से भर उठे। गृह मालिक ने पूछा- घडी तुझे कैसे मिली! कहाँ मिली! तुमने क्या किया!

उसने मुस्कुराते हुए कहा- मैंने कुछ नहीं किया। एक-एक कमरे में गया और वहाँ शान्ति से पांच मिनट बैठ गया। घडी की आवाज पर मैं अपना ध्यान केन्द्रित करने लगा। कक्ष की पूर्ण शांति के कारण घडी की टिक टिक मुझे सुनाई दे गई, जिससे मैंने उसकी दिशा और दूरी का सटीक अनुमान लगा लिया। और पलंग के पीछे पडी घडी मुझे मिल गई।

हमें आत्मा की आवाज भी तो तभी सुनाई देगी, जब हम थोडी देर परम शांत वातावरण में शांति के साथ बैठेंगे। बाहर की शांति जितनी जरूरी है, उससे कई गुना ज्यादा भीतर की शांति की अपेक्षा है।

अन्तर् शान्ति के वातावरण में ही तो हम परम तत्त्व की अनुभूति कर पायेंगे। हलचल मिटानी है। और आत्मा की अनुभूति का परम आनंद प्राप्त करना है।

जिनमणिप्रभसूरि

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 49

# बेटावद

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

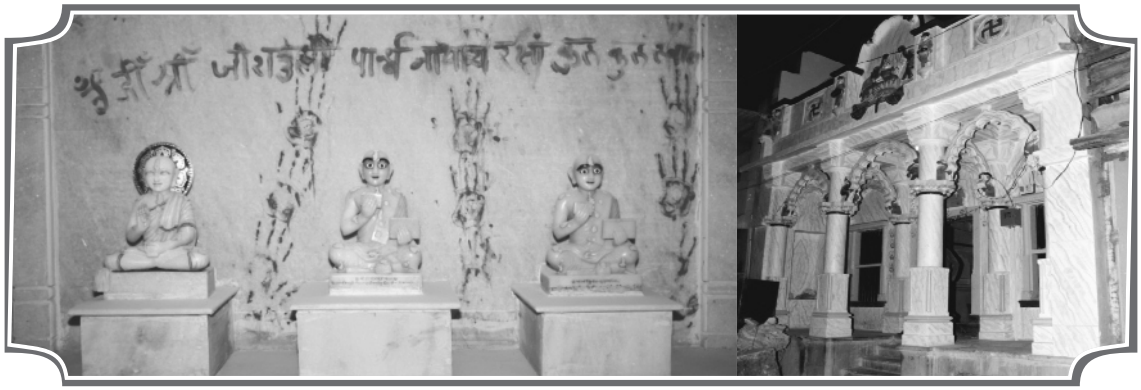

धुलिया जिले के सिंदखेड़ा तालुका अन्तर्गत 12000 की आबादी का गाँव बेटावद है। माली जाति की बाहुल्यता वाले ग्राम में दिगम्बर जैनों के 15 व श्वेताम्बर जैनों के 19 घर हैं।

जलगाँव से 100 कि.मी., अमलनेर तीर्थ से मात्र 20 कि.मी. दूर स्थित इस गाँव में मात्र 8 घर होते हुए भी जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ प्रत्येक सामाजिक धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय है। दादावाड़ी दर्शनम् ग्रन्थ में सूचना संकलन हेतु जब टीम वहां पहुंची तो रात्रि में मात्र आधा घंटा की पूर्व-सूचना पर गाँव का सकल संघ एवं मित्र मंडल दादावाड़ी में एकत्र हो गया।

गाँव के आम रास्ते पर पश्चिममुखी श्री संभवनाथ जिनालय अवस्थित है। मुख्य द्वार पर लघु बरामदे में तीन तोरण द्वार लगे हुए हैं। मध्य में जिनालय द्वार के साथ आजू-बाजू पीतल की छड़ों से युक्त दो झरोखे लगे हुए हैं। तोरणद्वार के स्तम्भों पर प्लास्टर ऑफ पेरिस युक्त रंगीन पेंट किया हुआ है। प्रवेश करने के साथ ही रंगमंडप के गोल गुम्बद की छत में कांच का सुन्दर कार्य दृष्टिगोचर होता है।

गंभारे में परिकर के साथ संभवनाथ प्रभु की 21 इंच प्रतिमा प्रतिष्ठित है। परिकर के आजू-बाजू मकराने पाषाण से निर्मित पिछवाड़ी है। मूलनायक के आजू-बाजू प्रभु सुमतिनाथ एवं महावीर स्वामी की 17-17 इंच ऊंची प्रतिमायें हैं।

जिनालय की प्रतिष्ठा संवत् 2018 ज्येष्ठ शुक्ला 3 शुक्रवार तदनुसार 26 जून, 1961 को हुई। मूर्तिपूजक संघ में सभी परिवार खरतरगच्छ आम्नाय के होने से सकल संघ की भावना लम्बे समय से दादावाड़ी निर्माण की रही। कालान्तर में साध्वी श्री मनोहर श्री जी म. की शिष्या साध्वी श्री मृगावती श्री जी की प्रेरणा से इस भावना को बल मिला।

सकल संघ द्वारा 26.10.2005 को दादावाड़ी का खात मुहूर्त एवं शिलान्यास किया गया। मंदिर में प्रभु की प्रदक्षिणा मार्ग भमती में प्रभु के बायें पीछे अलग कक्ष में मात्र 45 दिन में दादावाड़ी बन कर तैयार हुई।

साध्वी मृगावती श्रीजी ठाणा 3 की निश्रा में तीन दिवसीय महोत्सव के साथ दादा गुरुभक्तों की साक्षी में मिगसर सुद 10 संवत् 2062 दिनांक 10.12.2005 को दादावाड़ी की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

दादावाड़ी में सामने की दीवार के आगे तीनों दादा

गुरुदेव की 11 इंच ऊंची प्रतिमायें प्रतिष्ठित की गईं। मूलनायक रूप में श्री जिनदत्तसूरि जी, दायें मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि जी एवं बायें श्री जिनकुशलसूरि जी प्रतिष्ठित हैं। एक ही नाप की तीनों प्रतिमा जी मकराना पाषाण से निर्मित हैं। मणिधारी दादा गुरुदेव की प्रतिमा नूतन होने के कारण धवलता लिये हुए हैं। शेष दो प्रतिमा जी प्राचीन होने से थोड़ा पीलापन लिये हुए हैं। प्राचीन प्रतिमाओं पर दादा गुरुदेव का नाम है परन्तु वर्ष अंकित नहीं है। नूतन प्रतिमा पर वर्तमान में चल रही परम्परा अनुसार लेख अंकित है।

दादावाड़ी के अन्दर से घूमती सीढ़ियाँ जिनालय गंभारे के ऊपर जाती हैं, जहाँ शिखर में स्थित गंभारे में श्रेयांसनाथ प्रभु प्रतिष्ठित हैं।

संभवनाथ मित्र मंडल द्वारा हर सोमवार को सामूहिक इकतीसे एवं भक्ति का आयोजन होता है। गाँव में श्रीमती मोहनबाई फतेहलाल ललवानी जैन धर्मशाला है, जिसमें दो हॉल, दो कमरे हैं। इस ललवाणी धर्मशाला के ऊपर के हॉल का उपयोग साधु-साध्वी उपाश्रय के रूप में किया जाता है। व्याख्यान हॉल नीचे बना हुआ है।

जैन श्री संघ की एक अलग धर्मशाला है। वर्तमान में यह टूट-फूट के कारण पर्याप्त सुधार मांगती है।

108 पार्श्वनाथ तीर्थों में प्रसिद्ध मनवांछित पार्श्वनाथ तीर्थ 80 कि.मी., गीरुआ पार्श्वनाथ अमलनेर 20 कि.मी. एवं बलसाणा तीर्थ 60 कि.मी. दूर है।

जिनालय दादावाड़ी से बेटावद बस स्टेशन मात्र 300 मीटर दूर है तो रेलवे स्टेशन की दूरी 3 कि.मी. है। औरंगाबाद हवाई अड्डा 200 कि.मी. एवं जलगाँव हवाई अड्डा 100 कि.मी. की दूरी पर है।

❋

**पता : श्री सम्भवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं दादावाड़ी,**
बेटावद, तालुका - सिंदखेड़ा, जिला - धुलिया (महाराष्ट्र)

## मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 50

श्री जैन श्वेताम्बर मण्डल तीर्थ के अन्तर्गत श्री ऋषभदेव प्रभु का मंदिर अपने आप में अत्यन्त भव्य एवं तीर्थ के रूप में सुप्रसिद्ध है। जैन घरों की संख्या केवल 40 है, जिनमें से श्वेताम्बर आम्नाय वाले सभी घर दादा गुरुदेव में श्रद्धा से पूरिपूर्ण हैं।

इस मंदिर का निर्माण नागपुर निवासी श्री माणकचन्द जी झवेरी ने करवाया। अतः इसे झवेरी मंदिर भी कहा जाता है।

काले पाषाण में निर्मित श्री आदिनाथ की प्रतिमा अत्यंत दिव्यता लिये हुए है। इसके अतिरिक्त सुविधिनाथ एवं शान्तिनाथ परमात्मा भी प्रतिष्ठित हैं।

मंदिर की भमती के दोनों ओर दो कक्ष बने हुए हैं, जिनमें दाहिने कक्ष में तीन गणधर प्रतिष्ठित हैं। मध्य में श्री पुण्डरीक स्वामी एवं दायें-बायें श्री गौतम

स्वामी एवं सुधर्मा स्वामी विराजमान हैं।

बायीं तरफ स्थित कक्ष को दादावाड़ी का आकार दिया गया है, जिसमें दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी विराजित हैं। उनके दोनों ओर श्री जिनदत्तसूरि जी एवं श्री जिनचन्द्रसूरि जी के चरण स्थापित हैं।

इनकी पुनः प्रतिष्ठा मुनि श्री पीयूषसागर जी म. एवं साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म. की निश्रा में 12 दिसम्बर, 2005 को सम्पन्न हुई।

तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से संपन्न हुआ है। इस तीर्थ की प्रतिष्ठा आचार्य श्री रत्नशेखरसूरि, रत्नाकरसूरि, रत्नसुंदरसूरि एवं मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि साधु साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में 13 फरवरी 2013 को संपन्न हुई है।

इस तीर्थ में प्रतिदिन लगभग 200 यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

दादा गुरुदेव को पूर्व में प्रतिष्ठित हुए 60 वर्ष हो चुके हैं परन्तु प्रतिमा उससे काफी प्राचीन है, जिसे उसकी भव्यता से आंका जा सकता है।

❋

**पता : श्री ऋषभदेव प्रभु मंदिर,**
**श्री जैन श्वेताम्बर मण्डल तीर्थ,**
भद्रावती - 442 902 जिला - चन्द्रपुर (महाराष्ट्र), दूरभाष - 07175 - 266030

गोत्र इतिहास
**45**

# नखत/कुचेरिया गोत्र का इतिहास

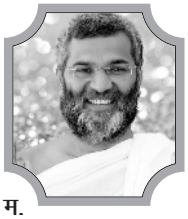

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

गोत्र संबंधी प्राचीन हस्तलिखित प्रपत्रों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नखत गोत्र की स्थापना विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में हुई।

इस संबंध में विस्तार से घटनात्मक इतिहास उपलब्ध नहीं है। पर जो भी सामग्री प्राप्त हुई, उस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह गोत्र खींची राजपूतों से निकला है। खींची राजपूत परिवार के तीन भाई- रायमल, देवीसिंह व चाकू इन तीनों भाईयों ने विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संवत् 1366 में आचार्य जिनकुशलसूरि के उपदेश से प्रभावित होकर जैन धर्म स्वीकार किया।

इस वंश में अनेक महत्त्वपूर्ण श्रावक हुए, जिनमें श्री फूलचंदजी नखत का परिवार जो जैसलमेर से कलकत्ता जा बसा था। उनके पुत्र श्री मोतीचंदजी ने कलकत्ता में सुन्दर धर्मशाला बनवाई।

इसी नखत गोत्र के सेठ मयकरण मगनीराम का परिवार कुचेरा से जालना आकर बसा। कुचेरा से आने के कारण कुचेरिया कहलाने लगा।

पत्र में लेख

# प्रिय आत्मन्

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

प्रिय आत्मन्!

इन दिनों अतीव व्यस्तता के कारण पत्र लिखने में थोडी देर हुई।

लगभग एक माह पूर्व ता. 20 जनवरी को आदिनाथ परमात्मा का निर्वाण कल्याणक मेरु त्रयोदशी के रूप में मनाया था। वांचना का क्रम चल रहा था।

परमात्मा आदिनाथ के जीवन की प्रमुख घटनाओं को आधार बनाकर वांचना दे रहा था।

कर्म बंधन और उसके फल के संदर्भ में बहुत ही सरलता व सहजता के साथ परमात्मा आदिनाथ के जीवन की यह घटना हमें सम्यक् रूप से समझाती है। न केवल समझाती है, बल्कि सावधान करती है।

प्रसंग छोटा-सा है। जो कि सायास नहीं, अपितु अनायास हुआ है। आदिनाथ प्रभु जब पूर्व भव में एक किसान थे तब एक बैल से अनाज का कोई काम करवा रहे थे। बैल ने अनाज में अपना मुख डालना प्रारंभ किया तो एक आम किसान की भांति उस किसान ने बैल के मुख पर डोरियों से बना छींका बांध दिया। उनका इरादा उस बैल से अपने अनाज की रक्षा करना था। उस बैल के प्रति कोई दुर्भाव न था। न उसे भूखा रखने की कामना थी। छींका बांधते समय सोचा था कि काम पूरा होने के बाद खोल दूंगा जिससे वह घास चारा आदि ग्रहण कर सकेगा।

पर घटना ऐसी हुई कि काम पूरा होने के बाद वह किसान किसी दूसरे काम में लग गया। छींका खोलना भूल गया। इधर वह बैल क्षुधा के कारण अपार पीडा का अनुभव करने लगा। वह घास के पास गया, पर छींका बंधा होने के कारण खाने की बात तो दूर अपना मुख भी खोल नहीं पाया। वह घोर पीडा का अनुभव करने लगा। वह बार-बार अपना मुंह घास के पास ले जाता पर अपना मुख नहीं खोल पाने के कारण खा न पाता। मुख खोलने के लिये उसने ताकत का इस्तेमाल किया। पर रस्सी मजबूत थी। उस रस्सी और उसके मुख की चमडी में संघर्ष होने से चमडी पूरी छील गई। उसकी पीडा में और वृद्धि हो गई।

वह दर्द और भूख के कारण छटपटाने लगा। और वह दर्दभरे निसासें डालने लगा।

इतिहास कहता है- उसने 400 निसासें डाले। बाद में जब उस किसान को याद आया तब उसने छींका हटाया। पर परिणति का चक्र तो प्रारंभ हो चुका था।

वह किसान अनजाने ही सही पर बैल को भूखा रखने और उसे पीडा से छटपटाने में निमित्त तो हो ही चुका था। कर्मबंधन तो होना ही था।

उसी बंधन के परिणाम स्वरूप परमात्मा रिषभदेव को दीक्षा लेने के बाद 400 दिनों तक शुद्ध आहार पानी नहीं मिला। विनीता नगर के सारे लोग बडे ही विनीत थे। इसलिये ऐसा मत समझना कि वे लोग आहार देना नहीं चाहते थे। वे तो चाहते ही थे, पर कर्म नहीं चाहता था। कर्म ने ऐसी अपनी व्यूहरचना की कि उनके हृदय में आहार पानी अर्पण करने का भाव ही पैदा नहीं हुआ। जो नहीं ले सकते थे, उन वस्तुओं की प्रार्थना थी। पर उस आहार के लिये कभी प्रार्थना नहीं की, जो वे ले सकते थे।

प्रिय आत्मन्!

इस कर्म सिद्धान्त को समझना। अनजाने में हुआ

अपराध इतना भयंकर परिणाम देता है तो जान बूझकर किया गया अपराध कितना खतरनाक परिणाम देने वाला बन जाता है। कभी गंभीरता से विचार करना।

इस जीवन में तुम्हें हर पल सावधान रहना है। तुमने यदि दो बातों का ध्यान रखा तो तुम्हारा जीवन आदर्श बन जायेगा। मिला हुआ यह जीवन... मिली हुई यह अनुकूलता... सार्थक हो जायेगी।

1. नये कर्म का बंध न हो। इसके लिये तुम्हें अपने मन को नियंत्रित करना होगा। अपने विचारों को सही दिशा देनी होगी। किसी भी प्रकार की अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थिति में कषाय भाव पैदा न हो, इस बात का विवेक रखना होगा। क्योंकि विवेक ही तुम्हें विश्लेषण करना बतायेगा। स्थिति का विश्लेषण करना सीख लो। तब तुम्हें लगेगा कि मैं जिस व्यक्ति की बातों के कारण आवेश में आ रहा हूँ। उस व्यक्ति के स्थान पर मैं होता तो मैं भी वैसा ही करता। तब मन शान्त होगा। हमें कषाय भावों का विसर्जन करना हैं।

2. पूर्व कर्म का उदय होने पर प्रसन्नता से उसका भोग करो। पूर्व में बंधे पाप कर्म जब उदय में आते हैं। तो मन रो पडता है। उस समय यह विचार करो कि मैंने ही कर्म बंध किया है, तो भोगना भी तो मुझे ही होगा। और साथ में यह भी विचार करो कि पाप कर्म उदय में आकर नष्ट हुआ। अनुभव करो प्रसन्नता का कि अब वह पाप कर्म क्षय हुआ। अब वह अपना कटु फल मुझे नहीं देगा।

ये दो विचार जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान करेंगे। अपना ध्यान रखना। हर पल परमात्मा की इस वाणी का चिंतन करना।

तुम्हारा

जिनमणिप्रभसूरि

# पूज्य गच्छाधिपतिश्री का कार्यक्रम

राजनांदगांव, दुर्ग व रायपुर के ऐतिहासिक अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव व दीक्षा महोत्सव की पूर्णता के पश्चात् पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 2 ने रायपुर से विहार कर कोरबा पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 13 मार्च को श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से पूज्यश्री भाटापारा, रायपुर, धमतरी, कांकेर, केशकाल, नारायणपुर होते हुए ता. 3 अप्रेल को कोडागांव पधारे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक मनाया गया। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री जगदलपुर, सुकमा, विजयवाडा होते हुए गुण्टुर पधारेंगे। जहाँ हुण्डिया परिवार द्वारा निर्मित श्री कुंथुनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह संपन्न होगा।

पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ठाणा 5 ने रायपुर से ता. 9 मार्च 2023 को शाम को धमतरी के लिये विहार किया। वहाँ छह दिनों की स्थिरता के पश्चात् बलोदा, दल्लीराजहरा, कुसुमकसा, भानुप्रतापपुर होते हुए नारायणपुर पधारे, जहाँ पूज्य गुरुदेवश्री से मिलन हुआ। वहाँ से पूज्यश्री के साथ दक्षिण प्रान्त की ओर विहार होगा।

संपर्क- मुकेश प्रजापत- 79871 51421, वाट्सप- 98251 05823

कहानी
3

# हंस और केशव

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

(गतांक से आगे)

तब यक्ष की प्रतिमा से हाथ में तलवार लिये एक महाभंयकर पुरुष प्रकट हुआ और केशव को घूर-घूर कर देखते हुए बोला-हे दुरात्मा! तू मेरे धर्म को क्यों दूषित करता है? मेरे भक्तों का क्यों अपमान करता है? पापिष्ठ! तू शीघ्र ही भोजन कर! अन्यथा तेरे सिर के इस तलवार से सौ टुकड़े कर दूंगा।' यह सुनकर केशव बोला- हे यक्ष! क्यों मुझे धमकाता है? मैं मरने से नहीं डरता परन्तु मैंने गुरु से जो व्रत गहण किया है उसे भंग नहीं करूंगा। यह सुनकर यक्ष ने अपने सेवकों को आदेश दिया-हे सेवकों! इसके गुरु को यहाँ लाओ, जिससे यह भोजन कर सके।

उस देव के किङ्करों शीर्घ ही माया से कृत्रिम धर्मघोष नाम के उसके गुरु को बांधकर लाये। केशव भी अपने गुरु को विलाप करते हुए देखता है। अब यक्ष उस कृत्रिम मुनि से बोला-हे मुनि! तुम अपने शिष्य को भोजन कराओ अन्यथा मैं तुमको भी मारूंगा। यह सुनकर वह मुनि केशव से बोला-हे केशव! देवगुरु संघ कार्य के लिये...अकृत्य धर्मी पुरुष को करने योग्य है इसलिये तुम रात्रि में भी भोजन करो, अन्यथा ये मुझे भी मारेंगे। केशव बोला-सुनो! जो गुरु मुझे रात्रि भोजन त्याग का नियम देते हैं और वीतराग प्रणीत धर्म को कहते हैं, वे मरण के भय से कभी भी पाप का उपदेश नहीं देते, इसलिये तुम मेरे धर्म गुरु नहीं हो। ये इस मायावी यक्ष की माया ही है।

यह सुनकर वह यक्ष बोला हे दुष्ट! तू जल्द ही भोजन कर अन्यथा मैं तेरे गुरु को अभी ही मारूंगा। केशव बोला- हे मायावी! यह मेरे गुरु नहीं है। मेरे गुरु पाँच महाव्रतधारी, षड्काय जीवों के प्रतिपालक, तुम्हारे जैसों के वश में कदापि नहीं आते, उनके सम्मुख तुम देख नहीं सकते। हे केशव! मैं तुम्हारा ही गुरु हूँ, इसलिये रात्रि में भोजन करके मेरी रक्षा करो। इस प्रकार बोलते हुए मुनि को यक्ष ने मार कर धरती पर गिरा दिया, फिर भी केशव विचलित नहीं हुआ। तब केशव की दृढ़ता को देखते हुए यक्ष ने तलवार उठाकर केशव से कहा-हे केशव अभी भी शीघ्र ही भोजन कर ले तो तेरे गुरु को मैं जीवित कर दूंगा और महारिद्धि से युक्त राज्य भी तुम्हें दूंगा, अगर मेरे वचन को नहीं मानेगा तो तुझे मारकर यम के घर भेज दूंगा।

यह सुनकर केशव हंसते हुए यक्ष से बोला हे यक्ष! यह मेरे गुरु नहीं है, मरना तो एक बार अवश्य ही होगा, इसलिये मुझे मौत का डर नहीं है। इस प्रकार केशव की दृढ़ता से युक्त वचनों को सुनकर यक्ष ने क्रोध का त्याग कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसको अपने गले से लगाते हुए कहा-हे केशव मैं तुम्हारी दृढ़ता युक्त धर्माचरण से बहुत प्रसन्न हूँ। ये अवश्य ही तेरे गुरु नहीं है। ये सब मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये किया है। मरे हुए प्राणी मेरे द्वारा कदापि जीवित नहीं होते और मैं किसे भी राज्य नहीं दे सकता हूँ। यह देखकर अतीव विस्मित यात्री लोग केशव को कहने लगे-हे महाभाग! सात उपवास हो गए है, आपको थकान लग रही है, अभी सो जाओ। अब तुम भोजन करोगे तभी ही हम भोजन करेंगे, इस प्रकार कहकर वे उसे देखने लगे और केशव वहीं सो गया। यात्रिक लोग भी उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा को देखकर उसके विश्राम में सहायक बने।

इधर केशव को निद्रा आ गई। थाड़ा यक्ष ने प्रकट होकर केशव को उठाते हुए कहा-हे केशव! रात्रि व्यतीत हो चुकी है, सूर्योदय हो चुका है, अब निद्रा का त्याग कर जागृत हो जब केशव ने नेत्र खोले तो चारों ओर प्रकाश फैला हुआ देखा। आकाश में सूर्य भी देखा। तभी केशव

सोचने लगा-मैं तो सदा ब्रह्ममुर्हूत में जागता हूँ फिर भी मुझे नींद आ रही है अत: अभी सूर्योदय नहीं हुआ है, इस प्रकार शंकित मन से केशव यक्ष को देखने लगा। यक्ष ने कहा-तू विस्मय छोड़, प्रभात के कृत्य करके पारणा कर। यह सुनकर केशव बोला- हे यक्षराज! मुझे क्यों ठगते हो? अभी तो बहुत रात्रि बाकी है, यह तो केवल तुम्हारी माया से ऐसा रचा गया है। इतना कहते ही केशव पर आकाश से पुष्प वृष्टि हुई तथा केशव की जयकार होने लगी। तुरन्त ही वहाँ एक देव प्रकट हुआ तब वहाँ उस देव के अतिरिक्त यक्ष, यक्ष मंदिर और यात्रियों का समूह सब अदृश्य हो गए।

वह देव केशव से बोला-हे केशव! तुम पुण्यवंतों के बीच कान्तिमान रत्न समान हो, तुम्हारे जैसों के जन्म से पृथ्वी रत्नगर्भा कहलाती है। एक बार देव सभा में इन्द्र ने तुम्हारी प्रशंसा करते हुए कहा-''यशोधर नाम के श्रेष्ठी के तरुण पुत्र केशव को रात्रि भोजन त्याग के व्रत से कोई विचलित नहीं कर सकता, वह मेरु की तरह दृढ़ है।'' सभी देवों ने इन्द्र के वचन को स्वीकृत किया, परन्तु वह्नीसुर नाम के मेरे (स्वामी) ने सोचा इन्द्र ने जो कहा वह सत्य है! मनुष्य को इतनी दृढ़ता कहाँ से प्राप्त हो सकती है? वहाँ आकर यक्ष के मंदिर में मेरे द्वारा तुम्हारी परीक्षा की गई, परन्तु तुम तनिक भी चलित नहीं हुए, अत: तुम धन्य हो! कृतपुण्य हो। हे महाभाग मेरे अपराध को क्षमा करो। देव के दर्शन कभी निष्फल नहीं जाते, इसलिये कुछ वर मांगो। केशव ने कहा-मुझे सब प्राप्त हो गया, आपके दर्शन हो गए। यह सुनकर वह देव बोला-हे सत्पुरुष आज से तुम्हारा पक्षाल जिस रोगी पर छिड़का जायेगा वह निरोगी हो जायेगा और जो तू सोचेगा वह शीघ्र ही फलित होगा। पुण्यवान के लिये कुछ भी दुष्कर नहीं है। ऐसा कहकर देव ने उसे नगर के समीप छोड़ा और स्वयं अदृश्य हो गया।

अब केशव ने प्रात: समय मंदिरों से सुशोभित एक नगर देखा। प्रात: कृत्यों से निवृत होकर चलते हुए वह नगर में पहुँचता है, तब वहाँ धर्मोपदेश देते हुए धर्मसूरि नाम के आचार्य भगवंत को देखता है। वहाँ जाकर तीन प्रदक्षिणा देकर उनको वंदन करके योग्य स्थान पर जाकर बैठता है।

इधर साकेतपुर का राजा धनंजय गुरु को वंदन करने के लिये वहां आता है। वंदन करने के बाद बैठकर वह धर्मदेशना सुनता है। देशना पूर्ण होने के बाद वह गुरु को पूछता है-हे भगवन्! व्रत ग्रहण करने का मेरा मनोरथ लम्बे समय से है, बुढ़ापा रूपी राक्षस नजदीक आ रहा है और वह मेरी देह को पराभूत करेगा, अत: हे भगवन्! क्या करूं? पुत्र नहीं है तो राज्य किसे सौंपू? इसी चिन्ता से दु:खी हूँ। हे पूज्यवर् आज रात्रि को मैं सुखपूर्वक सोया हुआ था। तब एक दिव्यपुरुष ने मुझे कहा-हे राजन्! तुम चिन्ता मत करो। प्रभात समय गुरु वंदन को जाते समय गुरु के समीप बैठा हुआ जो व्यक्ति तुम्हें दिखे, उसे राज्य सौंप कर दीक्षा ग्रहण कर अपना कल्याण करना'' इतना कहकर वह पुरुष अदृश्य हो गया। अत: जागृत होकर प्रात: कृत्यों से निवृत होकर मैं यहां आया हूँ। उस समय गुरु ने भी केशव के रात्रि भोजन त्याग व देव द्वारा ली गई परीक्षा सम्बन्धी सारा वृतान्त राजा को सुनाया। गुरु द्वारा दिखाये गये केशव को देखकर विस्मित राजा गुरु से पुन: पूछता है-हे भगवन्! रात्रि में मुझे किसके द्वारा पूर्वोक्त वृतान्त कहा गया? गुरु ने कहा-हे राजन्! जिस देव द्वारा केशव की परीक्षा की गई थी उसी देव ने प्रसन्नतापूर्वक तुझे कहा था।

यह सब सुनकर हर्षित हुए राजा ने केशव को हाथी पर बिठाकर बहुत ही महोत्सव पूर्वक अपने घर ले गया। शुभ मुर्हूत में उसे अपने सिंहासन पर बैठाया और राज्य भार उसे सौंप कर गुरु के पास संयम ग्रहण किया। केशव भी अपने गुरु और राजर्षि को वंदन कर अपने घर लौट आया। वहाँ आकर वीतराग परमात्मा की पूजा करके, दीन दु:खियों को दान देकर केशव राजा ने पारणा किया।

केशव न्यायपूर्वक राज्य का संचालन करने लगा। आसपास के बहुत से राजाओं को अपने शौर्य-पराक्रम से जीतकर राजाधिराज बनकर अपने परिवार की तरह प्रजा का पालन करने लगा। राज्य करते हुए उसे अपने परिवार से मिलने की उत्कंठा भी तीव्र होने लगी।

(क्रमश:)

प्रभु वीर
के वचन

# काले कालं समायरे

**( उचित समय पर उचित कार्य कर लेना चाहिए )**

**–रमणलाल ची. शाह**

भगवान महावीर ने साधु साध्वियों को अपने आचार पालन में समय का पूर्णरूपेण ध्यान रखने की दृष्टि से कहा है कि जो कार्य जिस समय पर करने का हो, वह कार्य उसी समय कर लेना चाहिए। उठना, बैठना, सोना, गोचरी जाना, आहार लेना तथा प्रतिलेखना, प्रतिक्रमण इत्यादि धर्म क्रियायें समय पर कर लेनी चाहिए। असमय में कार्य करने से बहुत हानि होने की सम्भावना होती है, कभी-कभी तो पछतावा भी करना पड़ता है और इच्छित परिणाम भी प्राप्त नहीं होता, इससे साधु जीवन के गौरव की क्षति भी होती है।

मानव जीवन पर जिन विभिन्न तत्त्वों का प्रभाव पड़ता है, उनमें सर्वाधिक प्रभाव काल अर्थात समय का होता है। काल सतत प्रवाहमान है, इतना सूक्ष्म भी है कि इसे पकड़ना शक्य नहीं। वर्तमान-क्षणमात्र में भूतकाल बन जाता है, तो भविष्य काल कभी भी समाप्त नहीं होने वाला है, भूतकाल कब प्रारम्भ हुआ यह कोई नहीं कह सकता इसलिये यह अनादि है। भविष्य और भूतकाल दोनों अनंत है, तो दूसरी ओर वर्तमान काल मात्र एक क्षण (काल की एक लघुतम इकाई, जिसे जैन धर्म 'समय' कहता है) जितना ही है, फिर भी शक्ति व सामर्थ्य वर्तमान का ही है। काल के स्वरूप की यह कैसी विचित्रता है। इसीलिये वर्तमान का महत्त्व है।

काल का प्रभाव जड़ और चेतन दोनों तत्त्वों पर पड़ता है। छोटे बालक कुछ समय बाद बड़े हो जाते है, युवा वृद्ध हो जाते है और वृद्ध अपना समय पूरा होने पर संसार से बिदाई ले लेते हैं। जन्म और मृत्यु का क्रम दिन-रात निरन्तर चलता रहता है। जड़ पदार्थों में भी रूपांतर होता रहता है। आज की नयी वस्तु कल पुरानी हो जाती है, और समय आने पर नष्ट भी हो जाती है।

संसार में अनेक व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना लेते है, तो अनेक का जीवन बरबाद भी हो जाता है, ऐसा होने के अनेक कारणों में से एक कारण है 'काल'। जिन्हें अपने जीवन को सफल बनाना हो, उन्हें उचित समय पर उचित कार्य कर लेने चाहिए- **'काले कालं समायरे'**।

उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्याय में भगवान महावीर ने कहा-

**कालेण णिक्खमे भिक्खू**
**कालेण य पडिक्कमे ।**
**अकालं च विवज्जिता,**
**काले कालं समायरे ॥**

-'साधुओं को समय पर भिक्षा के लिये जाना चाहिए और समय पर वापस आ जाना चाहिए, असमय में कोई कार्य नहीं करना चाहिए, योग्य काल में योग्य कार्य कर लेना चाहिए।'

जिस प्रकार साधुओं को, उसी प्रकार गृहस्थों को भी उचित समय पर उचित कार्य कर लेना चाहिए। काल रूपी सांढ़ को सींग से पकड़ कर वश में रखना चाहिए। जो समय चूक जाते है, उन्हें निराश होना पड़ता है। कहावत भी है- समय बीतने पर बुद्धि जागती है।

समय का त्वरित सदुपयोग करने के संदर्भ में अति प्राचीन काल से बोध वचन प्रचलित हैं, क्योंकि समय का अनुभव सर्व कालिक है। **'न कालमतिपातयेत्'** (काम का समय मत गंवाओ), **'न कालमतिवर्तन्ते महान्तः स्वेषु कर्मसु'** (महापुरुष अपने कार्यों में काल का अतिक्रमण नहीं करते अर्थात विलम्ब नहीं करते।)

प्रकृति का नियम है कि नियमों की उपेक्षा करने वालों की प्रकृति भी उपेक्षा करती है- असमय में खाना, असमय जागना, असमय सोना आदि सभी विपरीत क्रियाओं का परिणाम मनुष्य को भोगना ही पड़ता है। जहाँ समय की बाबत मनुष्य नियमित है, वहाँ प्रकृति भी उसकी मदद करती है। जल, वायु, प्रकाश आदि के सहारे काम करने वाले कृषक, नाविक आदि को इसका अनुभव होता है । Strike when the iron is hot (-जब लोहा गरम हो तभी चोट करना चाहिए।) अथवा Make hay when the sun shines (-घास तभी सुखानी चाहिए जब सूर्य चमक रहा हो।)

जो मनुष्य समय के संदर्भ में जागृत है, वे अपने कार्यों को व्यवस्थित रूप से कर लेते है। संसार में महापुरुषों के जीवन का इतिहास देखें तो ज्ञात होगा कि उन्होनें अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया था। जो समय व्यर्थ गंवाते है, वे जीवन में अपेक्षित सिद्धि प्राप्त नहीं कर पाते, महान नहीं बन पाते।

समय आगे बढ़ता जाता है, इसे कोई भी नहीं रोक सकता। Time and tide wait for none (-ज्वार भाटा किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।) जिस किसी को भी जीवन में सिद्धि या सफलता प्राप्त करनी हो, उसे समय को वश में करना होगा। जो समय व्यतीत हो जाता है। वह पुनः वापस नहीं आता। सिद्धि या सफलता के शिखर पर पहुँचे हुए लोगों के जीवन पर विचार करें तो मालूम होगा कि उन्होनें अपने वर्षों का व्यवस्थित हिसाब रखा है, कभी-कभी तो आश्चर्य भी होता है कि बहुत ही छोटे से जीवन में उन्होनें इतने कार्य किस प्रकार किए होंगें! वस्तुतः समय को सही रूप में परखने वाले कितने ही महात्मा पचास-साठ वर्ष की जिंदगी में सौ वर्ष जितने कार्य कर जाते हैं। वे समय को व्यर्थ नहीं गंवाते, यह तो ठीक है किंतु अनेक बार वे एक साथ ऐसे दो-तीन काम भी करते है, जो एक साथ किए जा सकते है। गांधी जी मिलने आने वालों के साथ बातें करते-करते सूत कातते थे। एक साथ दो काम करने का अच्छा अभ्यास था, ऐसा अभ्यास अनेकों को होता है। यह ध्यान रहे कि ऐसा करते समय मनुष्य की स्वस्थ्यता और प्रसन्नता समाप्त न हो और भूल-चूक भी नहीं होनी चाहिए। जो लोग अपने मानव घण्टों का सदुपयोग करते है, वे लोग शीघ्रता से समृद्धि प्राप्तकर लेते है।

मनुष्य को अपने समय को सार्थक करना सूझता है और आता है। समृद्ध देशों के लोग अपने हर घण्टे का विचार करते है, नियमितता और समयपालन की चुस्तता को वहाँ महत्त्व दिया जाता है। दूसरों का समय बर्बाद करने का हमें कोई अधिकार नहीं है, ऐसी ईमानदार समझ वे रखते है। जबकि अर्द्धविकसित देशों में बड़ी संख्या में लोग निक्कमें बैठे रहते है, गप-शप करते रहते है और निंदा-चुगली जैसी छुद्र बातों में अपना और दूसरों का समय व्यर्थ करते है। इन व्यर्थ होने वाले घण्टों का यदि आर्थिक भार डाले बिना प्रबन्ध हो सके तो अनेकों विकास कार्य सरलता से हो सकते है। गांधी जी ने ग्राम सफाई, प्रौढ़ शिक्षा जैसे रचनात्मक कार्यक्रम बताकर उसे क्रियान्वित कराया था।

आज संसार समय के विषय निरन्तर सचेत हो रहा है। अवसरों की खोज, अणु के क्षेत्र व मिसाइलों में घण्टों और समय के बाद सेकेण्डस् का भी विचार होता है। खेलकूद के क्षेत्र में भी सेकण्ड का अंतर महत्त्वपूर्ण बन जाता है। औद्योगिक उत्पादन में समय किस प्रकार कम लगे कि उत्पादन की लागत न्यूनतम और लाभ अधिकतम हो सके यह सोचा जाता है।

काल की गति सम है किंतु मनुष्य को इसकी गति विषम लग सकती है। मिलन का समय छोटा और विरह का काल लम्बा लगता है, दुःख में दिन बड़े लगते है।

कितनी ही घटनायें जो वर्तमान में बहुत बड़ी लगती है, वे थोड़ा समय बितने के बाद कैसी गौण या छोटी हो जाती है। कभी-कभी तो बीता हुआ समय ही नयी परिस्थिति का वास्तविक विचार प्रदान करता है। यदि परिस्थिति का पहले से पता होता तो हमने जो कार्य किया

है, वह नहीं करते। जिससे इतना समय बर्बाद नहीं होता। अतीत पर नजर डालते ही प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ा बहुत तो ऐसा लगता ही है कि मेरा इतना समय अकारण व्यर्थ गया।

समय के विषय में सचेत रहने का यह अर्थ नहीं है कि समय की व्यवस्था में सदा चिंतित रहें। समय की बाबत समझपूर्वक सचेत रहना एक बात है और आतुर होना, हड़बड़ाना, समय के लिये कसमसाना, चिंतित होना यह दूसरी बात है। मनुष्य समय को अपना दास बनाए, उसका गुलाम न बनें। कितने ही व्यक्ति समय के बारे में चिंतित रहते है, घड़ी के घंटे के साथ सब कुछ करते है, परन्तु उनके जीवन में कोई प्रगति या शांति नहीं दिखाई देती। आज के समय में अनेक व्यक्ति Time Stress (-समय का तनाव) के अनुभव के कारण हृदय रोग और मानसिक तनाव व डिप्रेशन के शिकार बन जाते है। जिस प्रकार समय के लिए जागरूकता आवश्यक है, उसी प्रकार विश्राम और शांति भी उतनी ही आवश्यक है। कहा गया है-

What is this life full of care if there is not time to stand and stare.

(-चिंता से पूर्ण वह जीवन किस काम का जिसमें खड़े होने और रुकने को कोई स्थान न हो)

इसलिए एक लेखक ने कहा है कि To do great work a man must be petiant as well as very indutrious.

(-कोई भी महान कार्य करने के लिये व्यक्ति को धैर्य के साथ अति उद्यमी होना चाहिए।)

कहने का अर्थ है कि स्वस्थता, संयम, धीरज, धैर्य आदि सद्‌गुण काल के स्वरूप को समझने और इसका अधिक से अधिक लाभ लेने में उपयोगी बनते है।

हम देखते है कि अभिमानी मनुष्य अपनी महत्ता बताने के लिये दूसरों के साथ सरलता से बात भी नहीं करते है। समय के संदर्भ में उनकी इस कृत्रिम जागरूकता में उनका मिथ्या अभिमान जागृत रहता है। मुझे बिल्कुल फुरसत नहीं है ऐसा बताकर भागने वाले बाद में समय व्यतीत करने के लिए बेकार की कोशिशें करते है। मनुष्य समय के विषय में सतत जागृत हो और उनकी जागरूकता दूसरों को प्रतीत न होती हो और उनके व्यवहार को बिल्कुल भी बनावटी न बनाती हो, ऐसे मनुष्यों ने ही काल के मर्म को पचाया है, ऐसा कहा जा सकता है।

कलाई में घड़ी पहनकर भी अनेक व्यक्ति अपना कीमती समय व्यर्थ करते है, मानों कि कितना समय व्यर्थ चला गया है, यही जानने के लिये उन्होंने घड़ी पहनी है। क्या यह जानने की जरूरत भी किसी को होती है! वस्तुतः समय को पहचानने के लिये अपने पास घड़ी होना आवश्यक नहीं है, अनेक अपरिग्रही संतों के पास घड़ी नहीं होती, किंतु समय का ख्याल हमारी तुलना में उन्हें अधिक होता है, समय उनके आसपास सतत खेलता रहता है, अनेक महात्माओं को तो ऐसा अभ्यास हो जाता है कि वे कहें वही समय सच्चा होता है, कदाचित घड़ी गलत समय दर्शा सकती है, किंतु ये गलत समय नहीं बताते।

जीवन में भौतिक सिद्धियों के लिये काल का महत्त्व हो या न हो, आध्यात्मिक सिद्धियों के लिये काल का महत्त्व अनिवार्य है। एक क्षण का भी प्रमाद जीव को दुर्गति में ले जाता है। प्राप्त आध्यात्मिक सिद्धियों को स्थिर रखने के लिये निरंतर अप्रमत्तावस्था आवश्यक है, इसीलिए तो भगवान महावीर गौतम स्वामी को बार-बार कहते थे कि हे गौतम 'समय' मात्र का भी प्रमाद न करना। **समयं गोयम मा पमायए।**

काल सापेक्ष है, सूर्य चंद्र घूमते है इसलिए समय भी घूमता हुआ दिखता है, परन्तु अंतरिक्ष में ऐसे स्थान भी है जहाँ समय ठहर गया है, ऐसा लगता है। जिनकी आत्म स्वभाव में रमणता है वहाँ काल स्थिर हो गया ऐसी सूक्ष्मानुभूति होती है। जहाँ त्रिकाल ज्ञान है, केवलज्ञान है वहाँ भूत वर्तमान और भविष्य तीनों काल का ज्ञान एक रूप होता है, युगपत् होता है।

(मूल गुजराती लेख से हिन्दी अनुवादक- कमल कुमार बेगानी)

# खरतरगच्छाधिपतिश्री का छत्तीसगढ़ प्रवेश संपन्न

चिचोला 6 फरवरी। जयपुर चातुर्मास के पश्चात् जयपुर के मानसरोवर एवं मोहनवाडी, झालरापाटण, मण्डोदा, शाजापुर की प्रतिष्ठाएं संपन्न करवाकर पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा., पू. मुनिश्री विरक्तप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री मुकुन्दप्रभसागरजी म., मुनिश्री मृणालप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पू. साध्वी सम्यगदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6, पू. साध्वी संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 एवं पू. साध्वी दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 का ता. 6.2.2023 को छत्तीसगढ़ में प्रवेश निमित्त चिचोला में छत्तीसगढ़ प्रवेश समारोह प्रात: 8.00 बजे उत्साह एवं उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री उग्र विहार करते हुए छत्तीसगढ़ में नए इतिहास की रचना करने पधारे हैं।

छत्तीसगढ़ के समस्त संघों द्वारा पूज्यश्री का ससम्मान प्रवेश करवाकर धर्मसभा का आयोजन रखा गया।

सर्वप्रथम अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा दुर्ग द्वारा गुरु भक्ति से ओतप्रोत 'खम्मा घणी' गीत के द्वारा गुरुदेव का स्वागत किया गया। सुविहित प्रतिष्ठा महोत्सव समिति दुर्ग के महामंत्री सीए पदमजी बरडीया ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि राजनांदगांव से कोरबा तक की प्रतिष्ठाओं की शृंखला लेकर गुरुदेव उग्र विहार करके पधारे हैं। आपकी कृपादृष्टि हम पर इसी प्रकार बनी रहें।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी सुराणा ने कहा कि पूज्यश्री जिस उद्देश्य से पधारे हैं वे सारे कार्य निर्विघ्न रूप से संपन्न हो। कैवल्यधाम के ट्रस्टी एवं दुर्ग संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी कोठारी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जिसने भी पूज्यश्री को एक बार देख लिया, वो इनका ही हो जाता है।

ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट रायपुर के अध्यक्ष विजयजी कांकरिया ने कहा कि 2017 में गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में दादावाड़ी के जीर्णोद्धार का जो कार्य प्रारंभ हुआ था आज वह पूर्णाहुति की ओर है। रायपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अभयजी भंसाली ने कहा- हम पर कृपाकर पूज्यश्री पधारे यही हमारा बडा सौभाग्य है। प्रतिष्ठा के दशान्हिका महोत्सव में पधारने की विंनती की। K.M.P. शाखा धमतरी द्वारा भक्ति गीत प्रस्तुत किया गया।

राजनांदगांव के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री मनोजजी बैद ने नांदगांव की प्रतिष्ठा में सभी को पधारने की विनंती की। अशोकजी राखेचा धमतरी ने उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. को चातुर्मास प्रदान करने के भाव व्यक्त किये एवं रायपुर में दीक्षित होने वालों की बडी दीक्षा हमारे नगर में कराने की विनंती की।

बालाघाट के नीताजी लूणिया द्वारा भक्ति गीत की प्रस्तुति रही। मुमुक्षु संदीप कोचर ने कहा- पूज्यश्री मुझे अपने साथ ले जाने के लिये छत्तीसगढ़ पधारे हैं।

K.M.P की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरोजजी गुलेच्छा ने कहा कि मैं गच्छाधिपतिश्री के विषय में जितना बोलूं उतना कम है। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आपका वरदहस्त मुझ पर बना रहे।

पू. साध्वी दर्शनप्रभाश्रीजी म. ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ को पावन करने पूज्यश्री का पदार्पण हुआ है। सभी पूरा-पूरा लाभ उठाये।

पू. साध्वी संघमित्राश्रीजी म. ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जयपुर से यहाँ तक गुरुदेवश्री के सानिध्य में रहने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ।

K.M.P मार्गदर्शिका पू. साध्वी समयग्दर्शनाश्रीजी म. ने कहा कि गुरुदेवश्री के श्रीमुख से जिनवाणी सुनने के लिये हम आतुर है।

तत्पश्चात् इस कार्यक्रम के मुख्य केन्द्र पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने फरमाया कि छत्तीसगढ़ की भूमि उपजाऊ है, उर्वरा है। यहाँ जितना समय दिया जाये उतना कम है। पूज्यश्री ने महासभा के अध्यक्ष स्व. श्री मोतीलालजी झाबक व महासभा के महामंत्री स्व. श्री संतोषजी गुलेच्छा का स्मरण किया।

लगभग 6 वर्ष बाद यहाँ आने का योग बना तो छत्तीसगढ़ में 36 दिन तो रुकना हो ही जायेगा।

लंबे समय बाद पूज्यश्री के मुख से जिनवाणी श्रवण कर सभी प्रसन्न हुए। इस कार्यक्रम का संचालन संतोषजी बडेर दुर्ग ने बहुत ही सुन्दर तरीके से किया। संपूर्ण कार्यक्रम का लाभ श्री रमेशजी सन्देश जी मयूर जी ललवानी परिवार ने लिया। दुर्ग, रायपुर, राजनांदगांव, धमतरी, दल्लीराजहरा, बेरला, बालाघाट, महासमुन्द, कोरबा आदि स्थानों से बडी संख्या में पधारे गुरुभक्तों की साधर्मिक भक्ति कर लाभार्थी परिवार हर्षित हुआ। अंत में सीए पदमजी बरडीया ने सभी संघों का आभार व्यक्त किया। लाभार्थी परिवार एवं मुमुक्षु संदीप कोचर का छत्तीसगढ़ के सकल संघों के द्वारा बहुमान किया गया।

प्रेषक- मुकेश प्रजापत

## पूज्यश्री का 63 वां जन्म दिवस मनाया

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का 63वां जन्म दिवस फाल्गुन सुदि 14 ता. 6 मार्च 2023 को मनाया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री ने रायपुर नगर में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर ता. 4 मार्च को कोरबा के लिये विहार किया। ता. 6 मार्च को पूज्यश्री चन्द्रखुरी पहुँचे जहाँ भाटापारा, दुर्ग, रायपुर, मुंगेली, कोरबा, बिलासपुर, धमतरी, राजनांदगांव, भिलाई, महासमुन्द आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन हुआ।

जन्म दिवस वर्धापना कार्यक्रम के आयोजन का लाभ श्री जैन श्वे. श्री संघ, भाटापारा ने लिया।

समारोह को संबोधित करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने उपकारी पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री, पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म., पू. बहिन म. आदि का स्मरण किया। पूज्यश्री ने कहा- आज का दिन बधाई का है या विदाई का! बधाई तो आनंद के अवसर पर दी जाती है। जबकि आज का दिन आनंद का नहीं, अपितु चिंतन का है।

उन्होंने कहा- जन्मदिन प्रकृति का एक प्रेरणात्मक उपहार है कि अब सावधान हो जाओ। बहुत गई थोडी रही।

पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने कहा- आज केवल पूज्य गुरुदेवश्री का ही जन्म दिन नहीं है, अपितु पूजनीया माताजी म. का भी जन्म दिन है। क्योंकि आज के ही दिन पूज्यश्री का जन्म हुआ और इसके साथ 'मां' का भी जन्म हुआ। मैं उन्हें बधाई देता हूँ। पूज्यश्री का 63वां जन्म दिन 36गढ में मनाया जा रहा है, यह अपने आप में एक अद्‌भुत संयोग है।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. ने कहा- हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें पूज्यश्री के रूप में सद्‌गुरु मिले हैं। सद्‌गुरु हमेशा नजदीक आने की प्रेरणा देते हैं। हमें पूज्यश्री के निकट पहुँचना है। अपने स्वरूप के निकट पहुँचना है।

पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. ने गुरु गुण गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर भाटापारा श्री संघ के अध्यक्ष श्री रवीन्द्रजी टाटिया ने पूज्यश्री की संक्षिप्त जीवन-झलक प्रस्तुत की। पार्श्व कुशल महिला मंडल भाटापारा, खरतरगच्छ महिला परिषद् दुर्ग शाखा ने गीतिका प्रस्तुत की।

अ.भा. खरतरगच्छ महासभा के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी सुराणा, दुर्ग संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी कोठारी, महासभा के सहमंत्री व केयुप के पूर्व चेयरमेन श्री पदमचंदजी बरडिया, नवकार टाटिया भाटापारा ने अपने भाव प्रस्तुत किये। सभा का संचालन श्री रवीन्द्रजी टाटिया ने किया। कार्यक्रम पश्चात् पूज्यश्री को कामली अर्पण की गई व अष्टप्रकारी पूजा विधि के साथ नवांगी पूजन का विधान किया गया।

**'देखो महाराज आए' गीत लांच**- पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आगमन पर नये गीत की रचना पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. द्वारा की गई। इस गीत को यूट्यूब के नेमि कान्ति मणि चेनल पर ता. 6 मार्च 2023 को लांच किया गया।

# दुर्ग नगर में

## ओम् पुण्याहं पुण्याहं के साथ आदिनाथ परमात्मा बिराजमान हुए

दुर्ग 18 फरवरी।छत्तीसगढ क्षेत्र के दुर्ग नगर में श्री आदिनाथ परमात्मा के जीर्णोद्धार कृत जिनमंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव ता. 18 फरवरी 2023 को शुभ मुहूर्त्त में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक प्रतिष्ठाचार्य गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पू. आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म. पू. आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. पू. गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशलमुनिजी म. गणि आदि ठाणा, पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री तरुणप्रभाश्रीजी म., मंडल प्रमुखा साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में अत्यन्त उल्लास व आनंद भरे अहोभाव के साथ संपन्न हुआ।

महोत्सव का प्रारंभ ता. 12 फरवरी को पूज्यवरों के मंगल प्रवेश से हुआ। इस अवसर पर सभा का संचालन करते हुए कहा– पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से इस जिनमंदिर का जीर्णोद्धार कार्य प्रारंभ हुआ। उन्हीं के पावन मार्गदर्शन में जीर्णोद्धार का कार्य संपन्न हुआ। और उन्हीं के करकमलों से परमात्मा की प्रतिष्ठा संपन्न होने जा रही है।

अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने की विनंती लेकर श्री संघ व ट्रस्ट मंडल इन्दौर नगर में बिराजमान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री की सेवा में पहुँचा। पूज्यश्री ने अपनी निश्रा प्रदान करने की विनंती स्वीकार करते हुए 18 फरवरी 2023 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

प्रतिष्ठा महोत्सव को यादगार व ऐतिहासिक बनाने के लक्ष्य से प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का गठन किया गया। व श्री नरेन्द्रजी चौपडा बबलासा को सर्वसम्मति से संयोजक बनाया गया। सीए श्री पदमजी बरडिया महामंत्री नियुक्त किये गये। विविध समितियों का गठन किया गया।

ता. 13 को जलयात्रा विधान, कुंभ स्थापना, दीपस्थापना, नंद्यावर्त पूजन, पाटला पूजन आदि विधि विधान संपन्न हुए। शाम को परमात्मा के च्यवन कल्याणक का विधान हुआ। ता. 13 की रात्रि में च्यवन कल्याणक महोत्सव संपन्न हुआ। ता. 14 को जन्म विधान ता. 15 को बधाई ता. 16 को विवाह और ता. 17 को दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा आयोजित हुआ।

ता. 18 को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा आदिनाथ की 51 इंच की विशाल प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया। दाहिनी ओर के गर्भगृह में प्राचीन आदिनाथ परमात्मा को प्रतिष्ठित किया गया। जबकि बायीं ओर के गर्भगृह में दादा गुरुदेव की प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित किया गया।

मूलनायक परमात्मा को बिराजमान करने का लाभ प्रतिष्ठा समिति के संयोजक श्री नरेन्द्रजी चौपडा बबलासा ने लिया।

संघ के निर्णय के अनुसार ध्वजा का चढावा वार्षिक किया गया। इस वर्ष ध्वजा का लाभ भी श्री नरेन्द्रजी चौपडा ने लिया। प्रतिष्ठा संबंधी चढावे ऐतिहासिक रूप से आशातीत संपन्न हुए। प्रतिष्ठा के पश्चात् धर्मसभा में सभी लाभार्थियों व सकल श्री संघ का बहुमान किया गया। ता. 19 को द्वारोद्घाटन के पश्चात् सतरह भेदी पूजा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

# दीक्षा समारोह संपन्न

## संदीप कोचर बने मुनि महर्षिप्रभसागर एवं कुमारी प्रज्ञा बनी साध्वी सम्यक्प्रज्ञाश्री

रायपुर 1 मार्च। भिलाई निवासी मुमुक्षु संदीप कोचर एवं रायपुर निवासी कुमारी प्रज्ञा बोहरा की भागवती दीक्षा पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की परम पावन निश्रा में रायपुर नगर में चल रहे प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य ता. 1 मार्च 2023 फाल्गुन सुदि 10 को अनुमोदना और उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुई। इस पावन अवसर पर पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. आदि ठाणा पू. गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशलमुनिजी म. गणी आदि ठाणा की पावन निश्रा प्राप्त हुई।

साथ ही पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. सुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता प्राप्त हुई।

ता. 28 फरवरी को मुमुक्षुओं के वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया जो दादावाडी से रवाना होकर सदर बाजार जिनमंदिर पहुँचा। वरघोडे आदि कार्यक्रमों की व्यवस्था में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् रायपुर शाखा का पूर्ण योगदान रहा। ता. 28 मार्च की रात्रि में श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट रायपुर, केयुप, केएमपी आदि द्वारा मुमुक्षुओं का व मुमुक्षु परिवारजनों का भावभीना अभिनंदन किया गया।

ता. 1 मार्च को प्रात: 5 बजे परिवार जनों द्वारा चतुर्विध संघ की साक्षी से आज्ञा प्रदान करने व मुमुक्षुओं द्वारा दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना करने पर दीक्षा विधान प्रारंभ हुआ। विदाई/विजय तिलक का लाभ मोकलसर बैंगलोर निवासी संघवी श्री तेजराजजी पुखराजजी गुलेच्छा ने लिया।

प्रारंभिक विधि करने के बाद दोनों मुमुक्षुओं ने परमात्मा की अंतिम बार नवांगी पूजा की। स्वर्ण चैन अर्पण कर परमात्मा की भक्ति की तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री की अष्टप्रकारी पूजा की। स्वर्ण मुद्रा से नवांगी पूजा की।

शुभ मुहूर्त्त में परिवारजनों ने पूज्य गच्छाधिपतिश्री को रजोहरण व मुखवस्त्रिका अर्पण की। पूज्यश्री ने अभिमंत्रित करके जब रजोहरण मुमुक्षुओं के करकमलों में सौंपा तब उनका उल्लास दर्शनीय था। रजोहरण ग्रहण करने से पूर्व मुमुक्षु संदीप व प्रज्ञा ने अपने भाव अभिव्यक्त करते हुए अतिशीघ्र रजोहरण प्रदान करने की प्रार्थना की। अपने परिवारजनों से क्षमायाचना की। उनके उपकारों का वर्णन करते हुए उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया।

विधि विधान की पूर्णता पर पूज्यश्री ने मुमुक्षु संदीप कोचर का नाम मुनि महर्षिप्रभसागर व सुश्री प्रज्ञा बोहरा का नाम साध्वी सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी घोषित किया। मुनि महर्षिप्रभसागर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री के शिष्य बने तथा साध्वी सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी को साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. की शिष्या घोषित किया।

दोनों नूतन दीक्षितों ने एक वर्ष तक पूज्य गुरुदेव व गुरुवर्या से छूट रखते हुए संपूर्ण मौन व्रत ग्रहण करने का संकल्प किया, जिसकी सकल श्री संघ ने भूरि भूरि अनुमोदना की।

## नूतन साध्वी श्री सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी की बडी दीक्षा संपन्न

पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के कर कमलों से पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. की शिष्या नूतन साध्वी श्री सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी म.सा. की बडी दीक्षा ता. 4 मार्च 2023 को दादावाडी के पवित्र प्रांगण में संपन्न हुई।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म., पू. गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशल मुनि गणिजी सहित विशाल श्रमण श्रमणीवृन्द ने वासक्षेप से एवं श्रावक श्राविकाओं ने अक्षतों से नूतन साध्वी भगवंत को बधाया।

# रायपुर में इतिहास का नवसर्जन : दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

रायपुर 3 मार्च। छत्तीसगढ की राजधानी रायपुर नगर की सुप्रसिद्ध दादावाडी का जीर्णोद्धार संपन्न हुआ। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन में ही जिनमंदिर एवं दादावाडी का निर्माण हुआ। परमात्मा श्री धर्मनाथ मंदिर एवं दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव प्रतिष्ठाचार्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से ता. 3 मार्च 2023 फाल्गुन सुदि 11 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. आदि ठाणा, पू. गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशलमुनिजी म. गणि आदि ठाणा की पावन निश्रा प्राप्त हुई।

साथ ही पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. सुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता प्राप्त हुई।

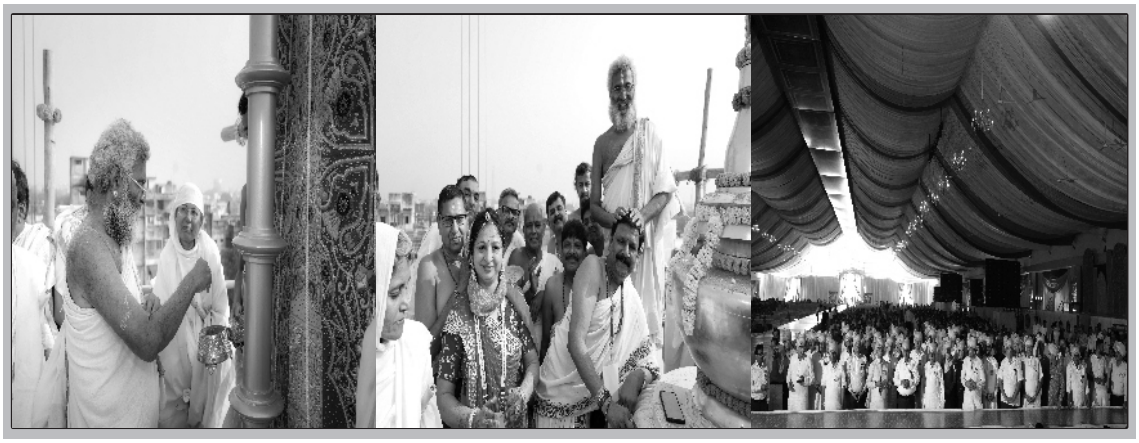

रायपुर देवेन्द्रनगर जिनमंदिर की प्रतिष्ठा के अवसर पर सन् 2017 अप्रेल महिने में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की प्रेरणा प्राप्त कर ट्रस्ट मंडल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री तिलोकचंदजी बरडिया, ट्रस्टी श्री तिलोकचंदजी भंसाली, श्री मोतीलालजी झाबक, श्री प्रकाशचंदजी सुराणा, श्री जयकुमारजी बैद ने सर्वसम्मति से जीर्णोद्धार का निर्णय लेकर उत्थापन का पूज्यश्री से शुभ मुहूर्त्त प्राप्त किया।

तदनुसार पूज्यश्री की पावन निश्रा में ता. 22 अप्रेल को विधि विधान के साथ जिनमंदिर में बिराजमान मूलनायक श्री धर्मनाथ परमात्मा आदि जिन बिम्ब, दादावाडी में बिराजमान गुरुदेव की चरणपादुका व प्रतिमा तथा पद्मावती देवी के मंदिर में बिराजमान पद्मावती देवी आदि का उत्थापन किया गया।

पूज्यश्री के मार्गदर्शन में जिन मंदिर व दादावाडी भव्यता के साथ तैयार हुई। अंजनशलाका प्रतिष्ठा हेतु शुभ निश्रा प्रदान करने व शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती लेकर रायपुर ट्रस्ट मंडल व श्री संघ, इन्दौर नगर में पूज्यश्री की निश्रा में पहुँचा। पूज्यश्री ने 3 मार्च 2023 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। प्रतिष्ठा महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने के लिये ट्रस्ट मंडल ने अनूठा पुरुषार्थ किया। विविध समितियों का गठन कर सकल जैन श्री संघ को प्रतिष्ठा महोत्सव से जोडा।

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 23 फरवरी को जलयात्रा विधान से हुआ। ता. 24 फरवरी को नूतन

प्रतिमाओं व पूज्यवरों का मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। इस शोभायात्रा की भव्यता देखते ही बनती थी। महिला मंडलों ने पंच परमेष्ठी की थीम इस शोभायात्रा में उपस्थित की।

ता. 25 को पूज्यवरों की पावन निश्रा में 16 एकड के विशाल भूखण्ड में अनुपम कलाकृतियों के साथ निर्मित भव्यातिभव्य रत्नपुरी नगरी का उद्घाटन समारोह हुआ। साथ ही पंचकल्याणक मंडप एवं भोजनशाला खण्ड का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन से पूर्व नंद्यावर्त पूजन का विधान किया गया।

ता. 26 से पंचकल्याणक महोत्सव विधान प्रारंभ हुआ। रत्नपुरी नगरी में संपन्न हुआ महोत्सव एक यादगार स्मृति बन गया। इस प्रकार के परमात्म भक्ति से ओतप्रोत अनूठा आयोजन श्रद्धालुओं ने प्रथम बार देखा था।

ता. 26 फरवरी से प्रारंभ हुआ पंचकल्याणक महोत्सव ता. 2 मार्च को दीक्षा कल्याणक के साथ पूर्ण हुआ। ता. 2 मार्च को भव्यातिभव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा छत्तीसगढ उमड पडा है। पूरे भारत से हजारों श्रद्धालुजनों का आगमन हुआ। खरतरगच्छ के सारे आगेवान श्रावक यहाँ उपस्थित थे। ता. 3 मार्च को शुभ मुहूर्त्त में ओम् पुण्याहं पुण्याहं की दिव्यध्वनि से पूर्ण मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा धर्मनाथ आदि जिन बिम्ब, प्राचीन जिन बिम्ब, श्री पुण्डरीक स्वामी, श्री गौतमस्वामी, दादा गुरुदेव, नाकोडा भैरव, पद्मावती देवी आदि बिम्बों की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। बोलियों का कीर्तिमान बना। अमर ध्वजा का अनुपम लाभ श्रीमती पानीबाई आसकरणजी भंसाली परिवार ने लिया। जबकि मूलनायक परमात्मा श्री धर्मनाथ प्रभु को बिराजमान करने का लाभ उज्ज्वल ज्वेलर्स झाबक परिवार राजिम वालों ने लिया।

ता. 4 मार्च को प्रातः मंगल मुहूर्त्त में द्वारोद्घाटन संपन्न हुआ। जिन मंदिर में सतरह भेदी पूजा व दादावाडी में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- ट्रस्ट मंडल के पांचों ट्रस्टियों ने अनूठा कार्य किया है। जिन मंदिर का निर्माण कार्य अद्भुत हुआ है। दादावाडी की भव्यता तो देखते ही बनती है। ऐसी दादावाडी पूरे भारत में कहीं नहीं है। संगमरमर में बनी ऐसी विशाल दादावाडी कहीं नहीं है। इसमें जो मेहराब लगे हैं, उसकी अलौकिकता अद्भुत है। ट्रस्टियों की व यहाँ के श्री संघ की जितनी अनुमोदना की जाये, कम है।

## देवेन्द्रनगर में पूज्यश्री का पदार्पण

रायपुर 22 फरवरी। जीर्णोद्धारकृत श्री धर्मनाथ जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी रायपुर की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा के लिये पधारे पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 6 का एवं साध्वी श्री सम्यगदर्शना श्रीजी म.सा., साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री संवरबोधिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शौर्यबोधिश्रीजी म.सा. ठाणा 6 का देवेन्द्र नगर में दिनांक 22.02.2023 को भव्य प्रवेश का सुनहरा कार्यक्रम चौक से प्रारंभ हुआ जो श्री शीतलनाथ जिनमंदिर पहुँचा जिसकी प्रतिष्ठा 2017 में पूज्यश्री के करकमलों से ही संपन्न हुई थी। प्रभु दर्शन के पश्चात् धर्मसभा में केयुप एवं केएमपी की कार्यकारिणी के नये सदस्यों की घोषणा एवं शपथ ग्रहण का कार्य संपन्न हुआ।

गुरुदेवश्री का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। श्री विजयजी मालू ने कहा कि उपाश्रय हेतु एक भूखण्ड का क्रय पूज्यश्री आशीर्वाद से हम कर पाये हैं और शीघ्र उपाश्रय बनवाकर गुरुदेवश्री का हम चातुर्मास करवायेंगे, इस प्रकार अपनी भावना व्यक्त की।

वहाँ से स्व. जेवंतराजजी कमलाबाई पारख के निवास स्थान पर पधारे जहाँ पूज्यश्री की गुरुभक्ति का अनूठा कार्यक्रम सपंन्न हुआ।

## सेतरावा में आदिनाथ जिनालय का जीर्णोद्धार प्रारंभ

सेतरावा 10 फरवरी। अतिप्राचीन सेतरावा नगर में श्री आदिनाथ जिनालय का जीर्णोद्धार पूज्य खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से प्रारंभ हुआ। उत्थापन आदि विधान पूर्व में पूज्य गच्छाधिपतिश्री के वरद हस्तों से संपन्न हुए।

पू. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में भूमिपूजन एवं खनन मुहूर्त्त दिनांक 10.2.2023 व शिलान्यास दिनांक 12.2.2023 को सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूज्या साध्वीवर्या ने कहा कि नवनिर्माण की अपेक्षा जीर्णोद्धार में आठ गुणा लाभ शास्त्रों मे बताया गया है। संप्रति महाराजा ने अपने जीवन काल में सवा लाख जिनमंदिर बनाये। जिनागम एवं जिनबिम्ब ही पंचम काल में संसार से पार उतारने में सहायक बनते है।

भूमिपूजन व खनन मुहूर्त का मुख्य लाभ स्व. पानीदेवी तनसुखदासजी लोढा परिवार सेतरावा वालों ने लिया। मुख्य कुर्म शिला का लाभ स्व. सुशीला देवी चैनसुखजी लोढा परिवार व अन्य शिलाओं का लाभ कस्तूरचंदजी अनोपचंदजी लोढा, रावलचंदजी किशनचंदजी लोढा, मांगीलालजी राणीदानजी लोढा, स्व. पानीदेवी तनसुखदासजी लोढा, लिख्मीचंदजी पुखराजजी गुलेच्छा सेतरावा, लाभचंदजी मोतीलालजी सांखला बालेसर, अमृतलालजी चैनमलजी दुग्गड़ सोमेसर, काम्बली वोहराने का लाभ पारसमलजी मांगीलालजी लोढा ने लिया।

सकल संघ ने शीघ्र जिनमंदिर के निर्माण व शिखर पर ध्वजा लहराएं उसके लिए अपनी प्रिय वस्तु त्याग कर संकल्प लिया। विधिविधान प्रकाश भाई सांचोर, संगीतमय बनाने गौरव मालू बाड़मेर उपस्थित रहे। बाहर से पधारे हुए संघों एवं लाभार्थियों का सेतरावा संघ द्वारा बहुमान किया गया।

कार्यक्रम के दौरान नाकोड़ाजी तीर्थ ट्रस्टी राजेन्द्रजी सांखला व सेतरावा सरपंच गोपालसिंहजी, हाथीसिंहजी, गंगासिंहजी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि सेतरावा प्राचीन नगर है। ये खरतरगच्छ के पूर्वाचार्यों की विचरण भूमि है। यहां पर चौथे दादा साहिब के द्वारा प्रतिष्ठित दादावाड़ी प्राचीन पहाडी पर विद्यमान है।

## निंबाहेडा दादावाडी में समारोह

निंबाहेडा 27 फरवरी। श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक खरतरगछ श्री संघ, निंबाहेड़ा(राज.) के अंतर्गत श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी परिसर में प्रस्तावित भोजनशाला का शिलान्यास पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म. की शिष्या पूज्या राजेंद्रश्रीजी म. एवं ज्योतिर्विद विजेंद्रश्रीजी म. की चरणाश्रिता मालवा मेवाड़ ज्योति पूज्या साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में हुआ।

## ध्वजारोहण किया गया

**बाड़मेर २४ फरवरी।** कल्याणपुरा महावीर चौक स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर की नवम वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। आचार्य श्री वसुनंदी महामुनिराज व पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की अज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. एवं पू. साध्वी विज्ञांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मनाई गयी।

प्रात: शुभ वेला में अठारह अभिषेक विधान व सत्तरभेदी पूजा हुई। कायमी ध्वजा की विधिविधान के साथ पूजा की गई। कायमी ध्वजा के लाभार्थी परिवार गोरधनमलजी प्रतापमलोणी रांका सेठिया धोरीमन्ना वाले एवं प्रभु भक्तों ने कायमी ध्वजा को सिर पर धारण कर परमात्मा की तीन प्रदक्षिणाएँ लगाते हुए विजय मुहूर्त में मन्त्रोचार तथा जयकारों व ढोल ढमाके के साथ झूमते-नाचते जिनालय की शिखर पर ध्वजारोहण किया।

ध्वजा लाभार्थी परिवार द्वारा लड्डू की प्रभावना का आयोजन किया गया। वर्षगांठ के उपलक्ष में जिन मन्दिर को रंगीन रोशनी व फूलों द्वारा सजाया गया। प्रेषक-कपिल मालू, सुनिल सिंघवी

**बाड़मेर २२ फरवरी।** लंगेरा रोड़ पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ हाला जैन संस्थान द्वारा निर्मित श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर की तीसरी वर्षगांठ सम्पन्न हुई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से आज्ञानुवर्तिनी पूज्या साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म., साध्वी निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में प्रात:काल ध्वजा के लाभार्थी परिवारों के निवास स्थान से गाजे-बाजे व ढोल-ढमाके के साथ मन्दिर प्रांगण में पहुंचे। सतरह भेदी पूजा, विजय मुहूर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

मूलनायक गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान की मुख्य ध्वजा श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलाल बोहरा हालावाला परिवार बाड़मेर द्वारा गौतमचन्द पारसमल हालावाला व गौतम स्वामी की ध्वजा रविन्द्र कुमार गोरधनदास रतनपुरा परिवार बैंगलोर एवं दादा गुरुदेव की ध्वजा श्रीमती लूणीदेवी नेमीचन्द संखलेचा परिवार सियांणी वाले हस्ते गौतम संखलेचा भिवण्डी की ओर से चढाई गई।

वर्षगांठ कार्यक्रम में ब्यावर, बैंगलोर, मद्रास, चैन्नई, अहमदाबाद, सुरत, भिवण्डी, पाली, इरोड़, त्रिपुर, वाराणसी, फालना, जयपुर, बाड़मेर के गणमान्य नागरिकों ने शिरकत की। प्रेषक-कपिल मालू

## दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि का 690 वां स्वर्गारोहण दिवस मनाया

श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में फाल्गुन वदि अमावस्या को तृतीय दादा श्री जिनकुशलसूरिजी की 690वीं स्वर्गारोहण तिथि मनाई गई। स्वर्गारोहण तिथि पर संघवी विजयराजजी हंसराजजी कुशलराजजी डोसी परिवार के सौजन्य से गुरुदेव की बड़ी पूजा और श्रद्धालुओं को भाता वितरित किया गया। गुरुदेव की पूजा अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद बैंगलोर द्वारा पढ़ाई गई।

दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भयलाल गोलेछा, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्रकुमार रांका, उपाध्यक्ष तेजराज मालाणी, महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष रंजीत ललवानी, महिला परिषद की अध्यक्षा रीटा पारख एवं पदाधिकारियों द्वारा गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर सकल संघ के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

दुर्ग में ओम पुण्याहं पुण्याहं के साथ आदिनाथ परमात्मा बिराजमान हुए

## रायपुर में इतिहास का नवसर्जन : दादावाड़ी की प्रतिष्ठा संपन्न

## दीक्षा संपन्न : संदीप बने मुनि महर्षिप्रभसागर एवं कु. प्रज्ञा बनी साध्वी सम्यक्प्रज्ञाश्री

साध्वी श्री सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी की बड़ी दीक्षा संपन्न

मुमुक्षु सुषमा कवाड़ का अनुमति पत्र अर्पण

मुमुक्षु समर्थ गुलेच्छा : संयम मुहुर्त घोषणा

वात्सल्य के साथ आशीर्वाद

जीवित स्वामी प्रभु वीर की आंगी के दर्शन
दि. 3 अप्रैल 2023

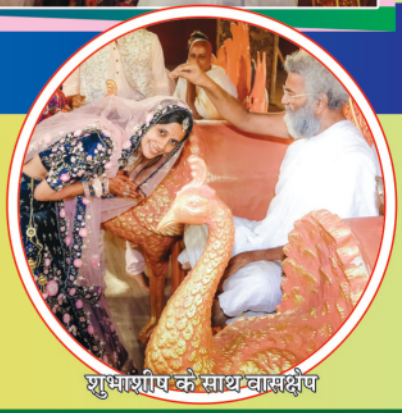

शुभाशीष के साथ वासक्षेप

ज्ञान वाटिका ब्रोशर का लोकार्पण

श्री रायपुर नगर में
पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री
जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा के कर
कमलों द्वारा
मुमुक्षु संदिप कोचर एवं
मुमुक्षु

केयुप छग का प्रान्तीय अधिवेशन

पारख परिवार द्वारा गुरुदेव का वधामना

## पारख परिवार द्वारा गुरु वधामणा

रायपुर 22 फरवरी। देवेन्द्रनगर के शीतल विहार के प्रभु दर्शन एवं धर्मसभा के पश्चात् पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 6 का एवं साध्वी श्री सम्यगदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री संवरबोधिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शौर्यबोधिश्रीजी म.सा. ठाणा 6 का स्व. श्री जेवन्तराजजी कमलाबाई पारख के नये आवास स्थल पर पदार्पण हुआ।

पारख परिवार द्वारा पूज्य गच्छाधिपतिश्री का भव्यता व नव्यता से परिपूर्ण अष्टप्रकारी नवांगी पूजन उछलते भावों के साथ किया गया। गुरुदेवश्री को पूरे परिवार ने गुरु के रूप में स्वीकार किया गया। पारख परिवार ने गुरु धारणा का विधान किया।

पूज्यश्री ने पारख परिवार को मंगल आशीर्वचन प्रदान किये। पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. ने परम गुरुभक्त ऐसे पारख परिवार के अन्तरंग भावों को संवेदनात्मक रूप से अभिव्यक्ति दी।

साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. ने अपनी सुमधुर आवाज में गुरु भक्ति गीत की प्रस्तुति दी एवं परम श्रद्धाशील कुमार ऋषभ ने पारख परिवार की ओर से भक्ति गीत के पुष्प समर्पित किये।

संगीतकार विधिकारक अरविन्दजी चोरडिया ने गुरु वधामणां का अद्भुत माहौल बनाया। कार्यक्रम में पधारे समस्त गुरुभक्तों की पारख परिवार ने साधर्मिक भक्ति की।

## उत्तर हावड़ा में आदेश्वर भवन का भूमिपूजन

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म. पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या आसाम प्रभाविका पू. प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म. पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की पावन प्रेरणा/आशीर्वाद से श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ उतर हावड़ा के तत्वावधान में आदेश्वर भवन की जगह लेकर नव निर्माण योजना का आयाम स्थापित किया।

श्री संघ की आग्रह भरी विनंती को स्वीकार कर साध्वी मंडल ने ता. 10 मार्च को हावड़ा में प्रवेश किया। ता. 12 और 13 को आप श्री के सानिध्य में उत्तर हावड़ा में आदेश्वर भवन का भूमि पूजन, पाटला पूजन, भूमि शुद्धिकरण एवं धरणेन्द्र देव का हवन आदि कार्यक्रम बहुत ही अदम्य उत्साह उमंग, धूमधाम से संपन्न हुए।

### बालोतरा में पाठशाला

दिनांक 24.02.2023 को कुशल नगर नवकार कॉलोनी बालोतरा में श्री बाडमेर खरतरगच्छ भवन में पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में जैन पाठशाला का शुभारंभ हुआ।

# नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

**श्री विक्रमपुर (राज.)**

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

*Administrotor*
**Shri Dharmendra Khajanchi**
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 ( जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

**श्री खेतासर (राज.)**

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

**श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)**

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

## खरतरगच्छ जनगणना फॉर्म

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के द्वारा खरतरगच्छ जनगणना फॉर्म का विमोचन किया गया। पूज्य गच्छाधिपतिश्री की पावन प्रेरणा से केयुप भारतभर के तमाम खरतरगच्छ के अनुयायियों की जनगणना की प्रक्रिया प्रारंभ करने जा रहा है।

### फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

| | | |
|---|---|---|
| 1. प्रकाशक स्थान | – | माण्डवला, जिला जालोर (राज.) |
| 2. प्रकाशक अवधि | – | मासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | – | श्रीमती पुष्पा ए. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला जिला-जालोर |
| 4. प्रकाशक का नाम | – | श्रीमती पुष्पा ए. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर |
| 5. सम्पादक का नाम | – | श्रीमती पुष्पा ए. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर |
| 6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। | | श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, मण्डवला, जिला-जालौर (राज.) |

**श्रीमती पुष्पा ए. जैन**
**प्रकाशक के हस्ताक्षर**

दिनांक : 5.3.2023

**पूज्य गुरुदेवश्री के अवतरण दिवस पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ**

## अनुकंपादान, चैत्यपरिपाटी, सामायिक, जीवदया, दादा गुरुदेव पूजा, गुरु भक्ति आदि कार्यक्रम आयोजित

अहमदाबाद 6 मार्च। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं महिला परिषद अहमदाबाद शाखा के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 64वें अवतरण दिवस एवं स्वर्ण संयम दिवस निमित्त अहमदाबाद में तीन दिन के भव्य कार्यक्रम किया गया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम में प्रथम दिन अनुकंपा दान किया गया। पूज्य गुरु भगवंत गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. एवं गणिवर्य मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वीवर्या सुरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या तपोरत्ना पूज्या साध्वी सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्या साध्वी दीपमालाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में चैत्य परिपाटी का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत शहर के पोल विस्तार के जिनालयों में दर्शन-पूजन में सभी ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। दोपहर में सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया उसमें पुरुष और महिलाओं ने अपने आत्म कल्याण के लिए 48 मिनट की साधना कर अपने जीवन को सार्थक बनाया। अंतिम तीसरे दिन सुबह गौशाला में गाय को चारा, कबूतरों को दाना आदि जीवदया का कार्यक्रम किया। दोपहर में महिला परिषद द्वारा नवरंगपुरा दादा साहेब ना पगला में दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई गई और रात्रि में प्रभु और गुरु भक्ति का आनंद और हर्ष उल्लास के साथ भक्ति कर जन्म दिवस मनाया। खरतरगच्छ युवा परिषद एवं महिला परिषद के स्थानीय सभी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## सैंथिया अजीमगंज में महोत्सव

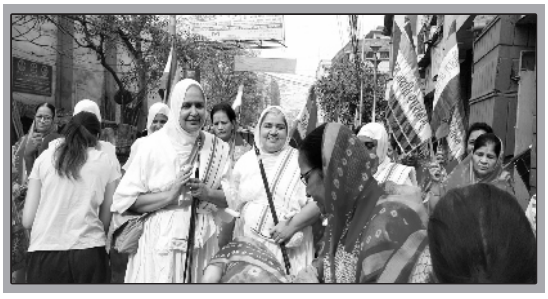

सैंथिया 3 मार्च। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म. की सुशिष्या आसाम प्रभाविका पू. साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. प्रियलताश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 कोलकाता माणिकतला दादावाड़ी का चातुर्मास पूर्णकर आपश्री जिनमंदिरों से मंडित अजीमगंज जियागंज पधारे, वहां आचार्य श्री विजयमुक्तिप्रभसूरिजी म.सा. के सानिध्य में पांच मंदिरों जी की प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान किया।

अजीमगंज से विहार कर सैंथिया में एक सप्ताह का प्रवास रहा। इस दौरान सुरेंद्रजी कोचर के नई मील में स्नात्रपूजा वास्तुकपूजा के पश्चात स्वामी वात्सल्य आयोजन किया गया। जोत्सना बहन के घर पर स्नात्र पूजा एवं वास्तुक पूजा धूम धाम से पढाई। कुशल गुरुदेव की जयंती के उपलक्ष में दादा गुरुदेव पूजा पढ़ाई, उसके पश्चात पू. साध्वी असम प्रभाविका प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म. पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. के दीक्षा दिवस के दिन धर्मसभा आयोजित की गई। सैंथिया में अखिल भारतीय महिला परिषद् का गठन किया गया।

## पूज्य स्थविर व गणिवर्य श्री का चैन्नई प्रवास

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ति स्थविर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं प्रवचनकार गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 एवं पू. प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की निश्रा में अयनावरम दादावाड़ी में कलिकाल कल्पतरु तृतीय दादा श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 690वीं स्वर्गारोहण पुण्यतिथि के उपलक्ष में मेले का आयोजन हुआ।

सर्वप्रथम दादा गुरुदेव की पूजा का आयोजन हुआ। उसके बाद प्रवचन हुआ। गणिवर्यश्री ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि दादा गुरुदेव जिनकुशलसूरीश्वरजी का जन्म सिवाना में हुआ। बुद्धि सम्पन्न थे। 9 वर्ष की आयु में चारित्र स्वीकार किया और गुरु ने योग्य जानकर क्रमशः वाचनाचार्य और आचार्य पद प्रदान कर अपने पट्टधर के रूप में आरूढ किया। आपने प्रतिबोध देकर 50,000 अजैन परिवारों को जैन बनाया और सम्यक्त्व प्रदान किया। हमें दादा गुरुदेव के उपकारों को भूलना नहीं हैं।

**दिनांक १९ फरवरी** को धोबीपेठ में दादा गुरुदेव की पुण्यथिति निमित्ते गुरुदेव की पूजा मंडल द्वारा पढ़ाई गयी। तत्पश्चात पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। प्रवचन में कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति गुरुओं के आधार पर टिकी हैं। सभी धर्मों में गुरु शब्द की महत्त्वता हैं। परमात्मा को मिलवाने वाले हमारे गुरु हैं। दादा कुशल गुरुदेव, जिन्होंने 50,000 अजैन परिवारों को बोध देकर जैनी बनाया। सम्पूर्ण श्रद्धा व आस्था से सिद्धांतों का पालन करना हैं।

संकलन –पूजा कपिल मेहता जोधपुर

## ज्ञान वाटिका समिति का गठन

पूरे भारत में बालक-बालिकाओं के धार्मिक अध्ययन के लिये ज्ञान वाटिका का संचालन किया जा रहा है। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से इसका संचालन हो रहा है। अध्ययन के लिये पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। उनके मार्गदर्शन में ज्ञान वाटिका में अध्ययन करवाया जायेगा। इसके माध्यम से वर्ष में दो परीक्षाऐं राष्ट्रीय स्तर पर ली जायेगी। बालकों को पुरस्कृत किया जायेगा।

इसके सुव्यवस्थित संचालन हेतु पूज्य गच्छाधिपतिश्री के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्तर पर समिति का गठन किया गया है।

यह समिति अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के अन्तर्गत पूर्ण स्वायत्तता के साथ कार्य करेगी।

संघवी श्री विजयराजजी डोसी बैंगलोर को चेयरमेन, श्रीमती सरोजजी गोलेच्छा राजनांदगाँव को अध्यक्षा, श्रीमती आरतीजी जैन बैंगलोर को उपाध्यक्षा, श्री संजयजी बैद चेन्नई को सचिव, श्री अजयजी डागा नंदुरबार एवं श्री कुशलजी कोचर अक्कलकुआ को सहसचिव, श्री केवलचंदजी छाजेड बाडमेर को कोषाध्यक्ष, श्रीमती सरिताजी जैन बाडमेर को प्रचार प्रसार मंत्री एवं श्री विक्रमजी गुलेच्छा बैंगलोर को डिजिटल प्रसार मंत्री का पदभार दिया गया है।

कार्यकारिणी में श्री राजूजी वडेरा बाडमेर, श्री भरतजी संकलेचा बाडमेर, श्री रमेशजी मालू कानासर वाले बाडमेर, श्री रमेशजी बोहरा अहमदाबाद, श्री प्रवीणजी लूणिया सूरत, श्री दिलीपजी कोचर अक्कलकुआ, श्री लक्ष्मणजी कवाड तिरपातूर, श्री कल्पेशजी लूंकड बैंगलोर, श्रीमती रेखाजी जैन मुंबई, श्रीमती मीनाजी बैद इन्दौर, श्रीमती उर्मिलाजी जैन बाडमेर को लिया गया है।

इस समिति के साथ गच्छ के आगेवान वरिष्ठ सदस्यों की एक मार्गदर्शक समिति बनाई गई है।

# केयुप एवं केएमपी का छत्तीसगढ प्रान्तीय अधिवेशन संपन्न

दुर्ग 19 फरवरी। छत्तीसगढ़ के दुर्ग नगर में भव्यातिभव्य ऐतिहासिक प्रतिष्ठा के पश्चात् मालवीय नगर स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादवाड़ी में केयुप व केएमपी की छत्तीसगढ स्थित शाखाओं का प्रान्तीय अधिवेशन पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म.सा. पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। लगभग 60 से अधिक साधु-साध्वीजी भगवंतों की पावन सानिध्यता प्राप्त हुई।

पूज्य गच्छाधिपति श्री के मंगलाचरण के पश्चात् केयुप व केएमपी एकता गान का गायन किया गया। जिसका सभी सदस्यों ने खडे होकर ससम्मान श्रवण किया। प्रदेशाध्यक्ष श्री प्रवीण जी बोथरा ने स्वागत भाषण से सभी का अभिवादन किया।

केएमपी शाखा दुर्ग ने स्वागत गीत से अपने उत्साह को व्यक्त किया। केएमपी की राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीमती मंजूजी कोठारी ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये।

सीए पदमजी बरडिया (पूर्व राष्ट्रीय चेयरमेन) ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि प्रथम प्रांतीय अधिवेशन की शुरुआत दुर्ग से हो रही है। हम सभी को शाखा के गौरव के लिए निरंतर प्रयास करने होंगें।

सुरेशजी भंसाली (राष्ट्रीय चेयरमेन) ने कहा- केयुप की शुरूआत रायपुर से प्रारंभ हुई। सरोजजी गुलेच्छा (राष्ट्रीय अध्यक्षा) ने केएमपी के प्रगति की जानकारी दी। और अधिक ज्ञान वाटिका की शाखाएं खोलने का विचार प्रस्तुत किया।

सीए सन्तोष बडेर ने पूज्यश्री की इस कल्पना की सराहना की। कहा कि गच्छ एवं शाखाओं के कार्य को पूरे समर्पण के साथ करने की प्रेरणा लेनी होगी।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. ने अपने प्रेरणात्मक उद्‌बोधन में फरमाया कि समर्पण और अनुशासन से ही हम उन्नति कर सकते हैं।

पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म.सा., मुनिश्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., मुनिश्री मलयप्रभसागरजी म.सा. एवं साध्वीश्री सुमित्राश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म.सा., केएमपी मार्गदर्शिका साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.सा., साध्वीश्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ने केयुप व केएमपी के कार्यों की सराहना की एवं उज्ज्वल भविष्य के लिये प्रेरणा प्रदान की।

आज केएमपी की नई शाखा बेरला शाखा के गठन की घोषणा की गई। अंत में दुर्ग केयुप के महामंत्री टीकमजी चोरडिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। दीपक चोपडा ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया।

## जीरावला दादावाडी में पाषाण मूहूर्त्त

जीरावल 22 फरवरी। जग जयवंत श्री जीरावला तीर्थ की पावन भूमि पर दांतराई मुख्य मार्ग पर स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी परिसर में दि. 22 फरवरी को पाषाण मुहूर्त्त प्रातः 8 बजे विधिविधान पूर्वक प्रभु पार्श्व के जयघोष के साथ किया गया।

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में निर्माणाधीन पावन परिसर में उनके शिष्य पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. गणि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में यह समारोह उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर स्नात्र पूजा, दिक्पाल पूजन, नव ग्रह पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, अष्ट मंगल पूजन आदि विधान प्रकाशभाई सांचोर ने करवाये। इस अवसर पर श्री प्रवीणजी संकलेचा, अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, प्रकाशचंदजी छाजेड, दीपचंदजी कोठारी, गौतमचंद संकलेचा, जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, हरखचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, मांगीलालजी टी. श्रीश्रीश्रीमाल, संघवी भवरलालजी मंडोवरा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

## श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ पेढ़ी चंपावाड़ी की नई कार्यकारिणी का गठन

सिवाना 31 दिसम्बर 2022। श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ जिनकुशलसूरि दादावाडी पेढ़ी चंपावाड़ी की आम सभा में नई कार्यकारिणी गठित की गई। जिसमें श्री मोतीलालजी गिरधारीलालजी ललवानी को अध्यक्ष एवं प्रकाशकुमारजी रिकबचन्दजी कंकुचौपड़ा को सचिव चुना गया।

कार्यकारिणी में उपाध्यक्षः संघवी वंशराजजी भंसाली और पुखराजजी नरसिंगमलजी कंकुचौपड़ा, सहसचिव डुंगरचंदजी वनेचंदजी गणधरचौपड़ा, कोषाध्यक्ष जवाहरलालजी पुखराजजी ललवानी को जिम्मेदारी दी गई। कार्यकारिणी सदस्यों में पारसमलजी मिश्रीमलजी छाजेड़, लालचंदजी कुंदनमलजी रांका, संघवी अरुणकुमारजी माणकचंदजी ललवानी, संघवी कमलेशकुमारजी लालचंदजी धारीवाल, सुरेशकुमारजी पुखराजजी ललवानी को लिया गया।

## विमोचन हुए संपन्न

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में संचालित ज्ञानवाटिका के ब्रोशर का विमोचन रायपुर प्रतिष्ठा महोत्सव में संपन्न हुआ।

ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट मंडल, श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी, प्रतिनिधि महासभा एवं ज्ञानवाटिका संचालन समिति के पदाधिकारियों ने Browser का विमोचन कर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री आदि को समर्पित किया।

## सम्यग्दर्शन का सर्वांगीण स्वरूप

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित 'सम्यग्दर्शन का सर्वांगीण स्वरूप' नामक पुस्तक का विमोचन श्रीमान सा भंवरलालजी विरधिचंदजी छाजेड बाड़मेर मुम्बई द्वारा किया गया।

प्रस्तुत पुस्तक में सम्यग्दर्शन का सुन्दरशैली से विश्लेषण किया गया है। जिसके पठन से सम्यग्दर्शन की निर्मलता में वृद्धि सहज हो जाती है।

# कोरबा नगर में प्रतिष्ठा का इतिहास बना

कोरबा 14 मार्च। छत्तीसगढ़ प्रान्त के कोरबा नगर में श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनमंदिर दादावाड़ी का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी रत्ना श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल के परम पावन सानिध्य में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस भव्य जिनमंदिर का निर्माण पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हुआ।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा सम्मेत शिखरजी वांचना शिविर, वीरायतन राजगृही अंजनशलाका प्रतिष्ठा तथा गुणायाजी तीर्थ भवन उद्घाटन आदि संपन्न करवाकर जब कोरबा पधारे थे, तब गुरुदेवश्री ने प्रेरणा दी तथा पू. बहिन म. की प्रेरणा ने और अधिक मजबूती देते हुए जिनमंदिर निर्माण का संकल्प लिया व उसी दिन श्रेष्ठिवर्य श्री गौतमचंदजी मुकेश कुमारजी भव्य कोचर परिवार ने स्वद्रव्य से विशाल भूखण्ड़ खरीद लिया।

पूज्यश्री के मार्गदर्शन में मानचित्र तैयार हुआ और पूज्यश्री द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त्त में दि. 21 मई 2022 को भूमि पूजन व खनन मुहूर्त्त तथा दि. 22 मई 2022 को शिलान्यास विधान संपन्न हुआ।

उस समारोह के उल्लास भरे वातावरण में कोरबा का नाम पूरे भारत में प्रसिद्ध कर दिया। साढ़े आठ महिने की अल्प अवधि में भव्य शिखरबद्ध जिनमंदिर पूर्ण रूप से तैयार हो गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ 9 मार्च 2023 चैत्र वदि गुरुवार से कुंभ स्थापना, दीप स्थापना आदि विधि विधानों द्वारा हुआ।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री ने रायपुर नगर में ता. 3 मार्च 2023 को ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न करवा कर ता. 4 मार्च को प्रातः द्वारोद्घाटन पश्चात् उग्र विहार कर ता. 10 मार्च को साध्वी मंडल के साथ कोरबा नगर में प्रवेश किया।

ता. 12 मार्च को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोड़ा संपन्न हुआ। समस्त कार्यक्रमों में मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी, दिगम्बर आदि सकल जैन श्रीसंघ के साथ अग्रवाल आदि कई समाज पूर्ण रूप से जुड़े। यहाँ तक कि मुस्लिम समाज ने भी शोभायात्रा का स्वागत किया।

ता. 13 मार्च 2023 को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा मुनिसुव्रत स्वामी बिराजमान हुए। साथ ही गौतम स्वामी, दादा जिनकुशलसूरि, नाकोड़ा भैरव, पद्मावती देवी की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित हुई। आजीवन कायमी ध्वजा का लाभ श्री गौतमचंदजी मुकेश कुमारजी भव्य कुमार कोचर परिवार ने लिया। मूलनायक प्रभु को बिराजमान का लाभ श्री राणुलालजी मोतीलालजी बोहरा परिवार ने, गौतम स्वामी को बिराजमान का लाभ श्री दिनेशजी मुकेशजी योगेशजी गिरीशजी बैद परिवार ने, दादा जिनकुशलसूरि का श्री रितेशजी नीतेशजी सम्यक्जी बोहरा परिवार ने, नाकोड़ा भैरव का श्री महावीरजी वैभवजी ऋषभजी बोहरा परिवार ने तथा पद्मावती देवी को बिराजमान का लाभ श्री गौतमचंदजी मुकेश कुमारजी भव्य कोचर परिवार ने लिया। ता. 14 मार्च को द्वारोद्घाटन हुआ जिसका लाभ श्री भैरूंदानजी विकासजी हितेश हर्ष बांठिया परिवार ने लिया।

संपूर्ण महोत्सव में सकल श्री संघ ने साम्प्रदायिक भावनाओं से मुक्त होकर सबने एक होकर लाभ लिया व प्रतिष्ठा महोत्सव को ऐतिहासिक बनाया। युवाओं ने सारी आवास, भोजन, वरघोड़े आदि की व्यवस्थाऐं पूर्ण मनोयोग से सम्हाली।

संपूर्ण छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति के वचनों में कोरबा प्रतिष्ठा के उल्लास का वर्णन प्रकट हुआ।

## पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय के साधु साध्वियों के
## पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
## द्वारा घोषित चातुर्मास

| | |
|---|---|
| 0 पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. | चेन्नई |
| 0 पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. | सिणधरी |
| 0 पूज्य गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म.सा. | नई दिल्ली |
| 0 पूज्य उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. ठाणा 3 | शहादा |
| 0 पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 | पालीताना |
| 0 महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 | पालीताना |
| 0 पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा | बैंगलोर |
| 0 पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा | चेन्नई |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा | पालीताना |
| 0 पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 | पालीताना |
| 0 पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा | सांचोर |
| 0 पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा | फालना |
| 0 पू. साध्वी श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा | भिवंडी |
| 0 पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | जयपुर दादावाडी |
| 0 पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा | धमतरी |
| 0 पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | सेलंभा |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी शुद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा | सिकन्द्राबाद |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म. आदि ठाणा | तिरपुर |
| 0 पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. | निम्बाहेडा |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 | रायपुर विवेकानंद नगर |
| 0 पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 | जोधपुर बाडमेर श्री संघ |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | बालोतरा |
| 0 पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 | चौहटन |
| 0 पू. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा | महासमुन्द व मुंगेली |
| 0 पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 | शहादा |
| 0 पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | पाली बाडमेर संघ |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 | सूरत कुशलदर्शन सोसा. |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | चेन्नई सूलै |
| 0 पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म. | सावन म.प्र. |
| 0 पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | गिरनार तीर्थ |
| 0 पू. साध्वी श्री प्रशमिताश्रीजी अर्हम्निधिश्रीजी आदि ठाणा 4 | मुंबई सांचोर श्री संघ |
| 0 पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | बैंगलोर |

# पूज्यश्री का आशीर्वाद...जीवन को करे आबाद

रायपुर की ऐतिहासिक अंजनशलाका, प्रतिष्ठा एवं दीक्षा के दशाह्निका महोत्सव में निश्रा प्रदान करने पधारे पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के दर्शनार्थ राजस्थान मंत्री श्री प्रमोदजी भाया, सांचोर के विधायक श्री सुखरामजी बिश्नोई, चोहटन के विधायक श्री पदमारामजी मेघवाल, बाड़मेर के विधायक श्री मेवारामजी जैन, बेतुल के विधायक श्री निलयजी डागा, पचपदरा के विधायक श्री मदनजी प्रजापत आदि पूज्यश्री के आशीर्वचन श्रवण कर पधारे।

पूज्यश्री के साथ चर्चा विचारणा कर उन्होंने परम प्रसन्नता का अनुभव किया। ट्रस्ट द्वारा मोमेण्टो अर्पण कर बहुमान किया गया।

## केएमपी शाखाओं का गठन

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा व मंगल आशीर्वाद तथा सज्जनमणि प्रवर्तिनी पू. श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में केएमपी की नई शाखाओं का गठन किया गया।

**केशकाल ( छत्तीसगढ )** खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा का विधिवत गठन हुआ। जिसकी अध्यक्षा- श्रीमती निर्मलाजी बोहरा, उपाध्यक्षा- श्रीमती मेनकाजी कटारिया, सचिव- श्रीमती राखीजी कटारिया, सह सचिव- श्रीमती नेहाजी गोलछा, कोषाध्यक्ष -श्रीमती मोनिकाजी कटारिया को मनोनीत किया गया।

**हिरियूर ( कर्नाटक )** खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा का विधिवत गठन हुआ।

| | |
|---|---|
| 0 पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | सूरत शीतलवाडी |
| 0 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | कोमाखान |
| 0 पू. साध्वी श्री दीपमालाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 | ब्यावर |
| 0 पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | सूरत पाल |
| 0 पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 | राजनांदगांव |
| 0 पू. साध्वी डॉ. श्री श्वेतांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 | मनोहरथाना |

# तिरपातूर में 10 जून को दो दिक्षाऐं होगी

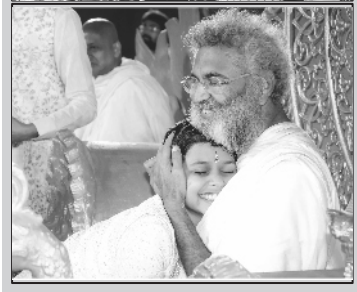

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में मुमुक्षु समर्थ गोलेच्छा व मुमुक्षु सुषमा कवाड की भागवती दीक्षा तिरपातूर नगर में आगामी आषाढ वदि 7 शनिवार ता. 10 जून 2023 को संपन्न होगी।

मुमुक्षु समर्थ गोलेच्छा व मुमुक्षु सुषमा कवाड ने परिवारजनों के साथ रायपुर में बिराजमान पूज्य गुरुदेवश्री से प्रव्रज्या मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

वेल्लूर निवासी दादाजी श्री प्रसन्नचंदजी, पिताजी श्री सुनीलकुमारजी माताजी श्रीमती अनुराधा देवी के सुपुत्र बारह वर्षीय बाल मुमुक्षु समर्थ गोलेच्छा ने पालीताना में दो वर्ष पूर्व उपधान तप की आराधना की थी, तब से उसके हृदय में संयम ग्रहण करने के भाव जागृत हुए। दो वर्ष के गुरुकुलवास में उसने संयम की शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ पंच प्रतिक्रमण, सप्त स्मरण, चार प्रकरण आदि का अभ्यास किया।

तिरपातूर निवासी श्रीमती पुष्पादेवी श्री रतनचंदजी कवाड की सुपुत्री मुमुक्षु सुषमा कवाड पिछले लम्बे समय से संयम ग्रहण करने की अभिलाषा संजोये हुए हैं। उसने तत्त्वज्ञान का विशिष्ट अभ्यास किया है।

## गच्छाधिपति भगवंत का जन्म दिवस मनाया

रामगंजमण्डी 6 मार्च। पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का 64वां अवतरण दिवस मनाया। पू. आचार्यश्री के अवतरण दिवस पर सभी जरुरतमंदों को नि:शुल्क खाना खिलाया। रामगंजमण्डी खरतरगच्छ महिला परिषद और खरतरगच्छ युवा परिषद के पदाधिकारी और सदस्यों द्वारा यह कार्य किया गया।

भोजन करवाने में सुभाष बाफना, अजीत पारख, विनय डांगी, प्रदीप चतर, रवि बाफना, गौरव बाफना, सुशील गोखरू, कमल छाजेड़, विनोद डोसी, प्रखर चतर, अक्षत डांगी, अभय बोहरा, विकास बाफना, वीणा बाफना, सारिका पारख, विजिता पारख, नीतू छाजेड़ साक्षी पारख मौजूद रहे।

# राजनांदगाँव जिनालय में गौतमस्वामी व पद्मावती देवी बिराजे

छत्तीसगढ के प्रवेश द्वार संस्कारधानी के नाम से प्रसिद्ध राजनांदगाँव नगर के श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के प्राचीन जिनमंदिर में श्री गौतमस्वामी, पद्मावती देवी की नूतन प्रतिमा एवं चक्रेश्वरी देवी की प्राचीन प्रतिमा की प्रतिष्ठा ता. 10 फरवरी 2023 फाल्गुन सुदि 4 को संपन्न हुई।

मुहूर्त्त व प्रतिष्ठा की विनंती लेकर राजनांदगाँव श्री संघ के ट्रस्टी गण उज्जैन नगर में बिराजमान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पास पहुँचे थे। पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान करते हुए शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म., पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय के सानिध्य में संपन्न हुई।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री व आचार्यश्री का मंगल प्रवेश ता. 8 फरवरी 2023 को संपन्न हुआ। जिनमंदिर दर्शन के पश्चात् पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री के अनन्य समर्पित भक्त गुल्लु भैया के नाम से प्रसिद्ध श्री मदनलालजी चौपडा के निवास स्थान पर प्रवेश हुआ। जहाँ पूज्यश्री का प्रवचन हुआ। इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने अहंकार विसर्जन की प्रेरणा दी। उन्होंने श्री मदनलालजी चौपडा की गुरु भक्ति की अनुमोदना की।

पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म., पू. साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म., पू. साध्वी श्री संवरबोधिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री चारित्रप्रभाश्रीजी म. ने अपने उद्गार व्यक्त किये।

मुमुक्षु संदीप कोचर व प्रज्ञा बोहरा का बहुमान किया गया। अ. भा. जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी सुराणा का बहुमान किया गया। प्रवचन के पश्चात् श्री मदनलालजी चौपडा की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

ता. 9 फरवरी को पू. आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म. का प्रवेश हुआ। ता. 10 फरवरी को मंगल मुहूर्त्त में गणधर श्री गौतमस्वामी, पद्मावती देवी व चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा भराने का लाभ श्री दुलीचंदजी बरडिया परिवार ने व बिराजमान का लाभ श्रीचंदजी कोचर परिवार ने, श्री पद्मावती देवी की प्रतिमा भराने का लाभ श्री भीखमचंदजी छाजेड परिवार ने तथा बिराजमान का लाभ श्री नरेशजी डाकलिया परिवार ने लिया। प्रतिष्ठा के पश्चात् आयोजित सभा में पूज्य गच्छाधिपतिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. का भी उद्बोधन हुआ। गुरुपूजन किया गया व कामली अर्पण की गई। गुरुपूजन का लाभ श्री गौतमचंदजी शिखरचंदजी सुरेशचंदजी रमेशजी नरेशजी डाकलिया परिवार ने लिया। जबकि कामली का लाभ श्री राजमलजी ललितजी मनीषजी भंसाली परिवार ने लिया। संचालन श्री रितेशजी लोढा ने किया।

ता. 10 फरवरी की शाम पूज्यवरों का विहार दुर्ग की ओर हुआ।

जो जिनेश्वरों ने कहा, वह सत्य एवं निःशंक है।

जिसमें अहंकार होता है, वह दूसरों को नीचा दिखाता है।
जिसमें संस्कार होते हैं, वो दूसरों का सम्मान करता है।।

## प्रभु महावीर जन्म कल्याणक निमित्त केयूप एवं केएमपी द्वारा रैली

अहमदाबाद 3 अप्रेल। शासन अधिपति प्रभु महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष में परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से खरतरगच्छ युवा परिषद एवं महिला परिषद अहमदाबाद शाखा द्वारा प्रथम बार विशाल रैली का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया।

सभी युवा और महिलाओं में एक उत्साह का माहौल रहा। प्रभु वीर के जयकारों के साथ कुशल वाटिका से जय मंगल सोसायटी स्थित प्रभु महावीर के मंदिर पहुंचे। वहां पर सभी आगंतुक युवा एवं महिलाओं द्वारा प्रभु की भक्ति की गयी।

उसके पश्चात प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक के निमित्त सभी को लड्डू की प्रभावना दी गई। अंकित बोहरा परिवार की तरफ से भी प्रभावना दी गई।

## श्री रतनचंदजी कवाड का समाधि मरण

तिरपातुर 24 मार्च। मूल फलोदी वर्तमान तिरपातुर प्रवासी श्री रतनचंदजी कवाड (सुपुत्र श्रीमती बदामीबाई संपतलालजी कवाड) का समाधि मरण हो गया। कुछ माह से व्याधिग्रस्त होते हुए भी उनके मन में संथारा ग्रहण की तीव्र भावना पैदा हुई। उनकी भावनाओं का सम्मान एवं शरीर की स्थिति देखते हुए कवाड परिवार ने पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज साहब से निवेदन किया। गुरुदेव ने उन्हें मांगलिक श्रवण करवाते हुए शरीर की नश्वरता का स्वरूप समझाते हुए चार शरण की महिमा श्रवण करवाई।

उन्हें गुरुमुख से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया। निरंतर 6 दिन तक तीव्र व्याधि में भी समता के भावों को आत्मा में स्थिर करते हुए उन्होंने अपना पूरा समय जाग्रत अवस्था में बिताया।

बडे परिवार के सदस्य होने से अनेक परिजन एवं स्थानीय श्रावक-श्राविका का अनुमोदनार्थ एवं मिच्छामि दुक्कडं करने के लिए निरंतर आवागमन रहा। आगंतुक के साथ मौनपूर्वक खमत खामना करते हुए एवं नवकार मंत्र की धुन व प्रभु भक्ति के स्तवनों को श्रवण करते हुए दिनांक 22 मार्च को शाम 6 बजकर 35 मिनट पर उनका पंडित मरण हो गया। दिनांक 23 मार्च को उनकी पालखी निकाली गई।

उनकी स्मृति में गुणानुमोदना सभा का आयोजन आराधना भवन में दिनांक 24 मार्च को किया गया। जिसमें श्री संघ के अनेक सदस्यों ने श्री कवाड जी के समता भावों की महिमा गाई। श्री रतनचंदजी की सुपुत्रियों ने स्मृति गीत का गान कर एवं अपने पिता के वीरत्व भावों का परिचय देकर सभा को पिता के वात्सल्य भावों में ओतप्रोत बनाया।

जहाज मंदिर परिवार उन्हें हार्दिक भावांजलि समर्पित करता है।

# प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

## सन् 2023 चातुर्मास, वेपेरी, चेन्नई

# शासनोत्कर्ष वर्षावास 2023

भव्य चातुर्मास प्रवेश
आषाढ़ सुदि 13
शनिवार

रायपुर में चातुर्मास की विनंति करते हुए

भव्य चातुर्मास प्रवेश
01 JULY 2023

## मंगलकारी उपधान तप

**प्रथम प्रवेश : भाद्रपद सुदि 14, गुरुवार, 28.09.23** | **द्वितीय प्रवेश : आसोज वदि 1, शनिवार, 30.09.23** | **माला मुहूर्त : कार्तिक सुदि 3, गुरुवार, 16.11.23**

## श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट, वेपेरी-चेन्नई

### विशेष दिवस

- 5 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 6 अप्रैल नवपद ओली समाप्त, सिद्धाचल यात्रा, श्री पद्मप्रभस्वामी केवलज्ञान कल्याणक, अस्वाध्याय दिवस
- 7 अप्रैल श्री कुंथुनाथ मोक्ष कल्याणक, अस्वाध्याय दिवस
- 8 अप्रैल श्री शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक, सज्झाय उत्क्षेप विधि
- 11 अप्रैल श्री कुंथुनाथ दीक्षा कल्याणक, श्री शीतलनाथ च्यवन कल्याणक
- 14 अप्रैल मीनार्क समाप्त दोपहर 2.59 तक
- 15 अप्रैल श्री नमिनाथ मोक्ष कल्याणक
- 17 अप्रैल पू. मुनिश्री मोहनलालजी म.सा. पुण्यतिथि, सूरत
- 18 अप्रैल श्री अनंतनाथ जन्म कल्याणक
- 19 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री अनंतनाथ दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक, श्री कुंथुनाथ जन्म कल्याणक
- 23 अप्रैल अक्षय तृतीया, वर्षीतप पारणा, रोहिणी
- 24 अप्रैल श्री अभिनन्दनस्वामी च्यवन कल्याणक
- 26 अप्रैल गुरु तारा उदय
- 27 अप्रैल श्री धर्मनाथ च्यवन कल्याणक,
- 28 अप्रैल श्री अभिनन्दनस्वामी मोक्ष कल्याणक, श्री सुमतिनाथ जन्म कल्याणक, पू. उपा. श्री सुखसागरजी म. पुण्यतिथि, पालीताणा,
- 29 अप्रैल श्री सुमतिनाथ दीक्षा कल्याणक
- 30 अप्रैल श्री महावीर स्वामी केवलज्ञान कल्याणक, पू. गुलाबमुनिजी पुण्यतिथि, पालीताणा
- 1 मई चतुर्विध श्री संघ स्थापना दिवस
- 2 मई श्री विमलनाथ च्यवन कल्याणक
- 3 मई श्री अजितनाथ च्यवन कल्याणक
- 4 मई पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 5 मई चन्द्र ग्रहण रात्रि 8.44 से रात्रि 01.02

# भाटापारा में केयुप कार्यकारिणी गठित

भाटापारा 23 मार्च। खरतरगच्छ युवा परिषद् की बैठक मंदिरजी में रात्रि 8:30 बजे रखी गई। जिसमें आगामी 2 वर्षों के लिए नई कार्यकारिणी की सर्वसम्मति से घोषणा की गई। आगामी 2 वर्षों के लिए संघ के युवा सदस्य रोहण जी कोटडिया को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। युवा परिषद के संरक्षक के रूप में आलोक जी टाटिया, श्री पीयूष जी खिलोसिया, श्री मुकेश जी सांखला, श्री राहुल जी चोरड़िया एवं श्री अभिषेक जी टाटिया का चयन किया गया।

# नारायणपुर में केयुप का गठन

नारायणपुर (छत्तीसगढ़) में गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में ता. 31 मार्च 2023 को अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप) की नारायणपुर शाखा का सर्वसम्मति से गठन हुआ। इस अवसर पर छग प्रदेशाध्यक्ष प्रवीण बोथरा उपस्थित थे। सर्वसम्मति से बने इस केयुप शाखा में श्री धनराजजी देशलहरा, श्री युधिष्ठिरजी देशलहरा एवं श्री सुरेशजी देशलहरा को संरक्षक बनाया गया। कार्यकारिणी इस प्रकार गठित की गई- अध्यक्ष- कुशल पारख, उपाध्यक्ष महेन्द्र देशलहरा, सचिव- आशीष देशलहरा, कोषाध्यक्ष नितिन देशलहरा, सहसचिव- मुकेश पींचा, सदस्य- ऋषभ देशलहरा, पूनम ललवानी, लय पींचा, सुजल देशलहरा, ईशान्त पींचा, हरक पींचा व प्रीतेश बरडिया।

# हैद्राबाद में शासन प्रभावना



पू. साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का हेद्रबाद नगर में प्रवेश दिनांक 1 फरवरी को हुआ। उनके 45 वें दीक्षा दीवस के उपलक्ष में श्री वीरचंदजी पदमकुमारजी के निवास पर प्रवचन व अल्पाहार आयोजित किया गया। फीलखाना संघ की ओर से सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया।

20 दिवसीय कक्षा में चंद्रसेन विश्वसुंदरी चरित्र समझाया गया। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की पुण्यतिथि का आयोजन केयुप द्वारा किया गया। श्री नेमीचंदजी दयालचंदजी कपील झाबक की ओर से बडी पूजा, श्री चांदमलजी विकासकुमारजी सोलंकी की ओर से अल्पाहार रखा गया।

21 फरवरी से पंच दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। विविध प्रतियोगिता एवं प्रवचनों द्वारा 80 श्राविकाओं को बोध दिया गया। शिविर संचालन दीपिका संकलेचा ने किया। श्री ललितकुमारजी संकलेचा, घेवरचंदजी धारिवाल, जसराजजी बाफना, मोतीलालजी ललवानी, वीरचंदजी ललवाणी, प्रवीणजी संकलेचा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

# श्री प्रवीणजी लोढा दुर्ग

दुर्ग निवासी श्रावक प्रवर श्री प्रवीणजी लोढा का दिनांक 23 मार्च 2023 को स्वर्गवास हो गया। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री के परम भक्त श्री लोढाजी दुर्ग नगर के अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के आगेवान कार्यकर्ता थे। प्रतिष्ठा में बहुत लाभ लिया था। ता. 23 मार्च को प्रात: पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री ने अस्पताल पधारकर उन्हें मांगलिक पाठ श्रवण करवाया था। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

## मनोहर मंडल प्रमुख

# पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी का स्वर्गवास

रायपुर 17 मार्च। महत्तरा पद विभूषिता छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या मंडल प्रमुखा पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. सा. का रायपुर नगर में अल्पकालीन व्याधि के बीच नवकार महामंत्र की आराधना के साथ समाधिपूर्वक दिनांक 17 मार्च 2023 को शाम को स्वर्गवास हो गया। रात्रि होने से ता. 18 मार्च को अग्नि संस्कार किया गया।

82 वर्षीया पू. साध्वीजी म. के व्याधिग्रस्त होने पर 13 मार्च को अस्पताल में भर्ती किया गया। ता. 15 को उपाश्रय में लाया गया। कोरबा नगर में बिराज रहे पू. गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने उन्हें भवचरिम संथारे का पच्चक्खाण दिया।

पू. साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. वसुंधराश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल पूर्ण रूप से सेवा में उपस्थित रहा। रायपुर संघ ने विशेष रूप से कार्याध्यक्ष श्री अभयजी भंसाली ने बहुत सेवा की।

**परिचय**- पू. साध्वीजी का जन्म खैरागढ (छग) नगर में श्रावक प्रवर श्री मेघराजजी मुणोत की धर्मपत्नी सौ. मलकु बाई की रत्नकुक्षि से वि.सं. 1998 के श्रावण वदि एकम को हुआ था। पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. के उपदेशों से प्रभावित होकर मात्र 22 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2020 के वैशाख वदि 6 को दीक्षा ग्रहण कर उनकी शिष्या बनी। जहाज मंदिर परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

## सादर श्रद्धांजलि

## श्रीमती मेमबाई सुराणा

जयपुर के खरतरगच्छ समुदाय के प्रथम परिवार सुराणा परिवार की सुश्राविका, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, श्रीमती अमर कुमारीजी सुराणा (मेमबाई सा सुराणा) का आकस्मिक निधन 15 मार्च, 2023 को हो गया। इस समाचार से संपूर्ण जयपुर संघ में शोक छा गया। देशभर से उनके परिवार हेतु संवेदना पत्रों का सिलसिला जारी रहा। बडी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उनके निवास स्थान पर पहुंचकर उन्हें सादर श्रद्धांजलि समर्पित की। निरंतर दो दिन उन्हें मांगलिक श्रवण प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. एवं तीर्थप्रभाविका मणिप्रभाश्रीजी म. ने श्रवण करवाया।

उनके आत्मश्रेयार्थ अंतरायकर्म निवारण पूजा मोहनबाड़ी ऋषभ जिन प्रासाद में पढाई गई। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के द्रव्य आदि परमात्मा के चरणों में अर्पित कर अंतरायकर्म निवारण हेतु मंगल प्रार्थना की गई। इस अवसर पूज्या साध्वी मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा रही। बड़ी संख्या में विभिन्न संघों के पदाधिकारी, श्रावक श्राविकाएं पूजा में पधारकर पुण्यार्जन में सहभागी बने। पूजा के अंत में आरती, मंगलदीपक हुआ। सुराणा परिवार की ओर से श्रीफल एवं संघ पूजा के रूप में प्रभावना दी गई। साध्वीश्री मणिप्रभाश्री जी म. ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

श्रीमती सुराणा जी का जीवन जिनशासन के लिए समर्पित था। प्रतिदिन प्रवचन श्रवण उनकी अतुलनीय विशेषता थी। साधु साध्वी जी की वेयावच्च उनके प्रमुख गुणों में शामिल था। उनके स्वर्गवास से गच्छ एवं जिन शासन में अपूरणीय क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित है।

# जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भांयदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ ट्रस्ट चित्तौड़गढ़
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई

## डॉ. प्रिया भंसाली को बी.एच.एम.एस. पदवी प्रदान

अक्कलकुवा। शहर के व्यवसायी श्री महावीर राणूलालजी भंसाली की सुपुत्री कु. प्रिया भंसाली ने बी. एच. एम. एस. अंतिम परीक्षा में सुयश प्राप्त किया हैं। हाल ही में दिक्षांत समारोह कार्यक्रम में डॉक्टर प्रिया भंसाली का डि. के. एम. एम. होमिओपॅथिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल छत्रपती संभाजीनगर की ओर से पदवी प्रमाणपत्र देकर गौरवान्वित किया गया। भंसाली परिवार में सी. ए., इंजिनीयर, एडवोकेट, व्यवस्थापन आदि पदों को सुशोभित कर रहे सदस्यों के साथ आपने डॉक्टर बनकर परिवार का नाम रोशन किया है। खरतरगच्छ महिला परिषद, शाखा-अक्कलकुवा के आप सदस्य भी हैं। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना।

प्रेषक- एडवोकेट गजेंद्र देवीचंद भंसाली

# पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.के प्रति

# कृतज्ञता समारोह

बाडमेर 3 अप्रेल। पूजनीया माताजी म. श्रमणी रत्ना श्री रतनमालाश्रीजी म. के 82 वर्ष व संयम के 50 वर्ष के उपलक्ष्य में बाडमेर नगर में कुशल वाटिका में त्रिदिवसीय कृतज्ञता समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान के तत्वावधान में आयोजित यह कार्यक्रम 11 मई से प्रारंभ होकर 13 मई तक चलेगा। 11 मई को वर्धमान शक्रस्तव महाअभिषेक, दि. 12 मई को दादा गुरुदेव महापूजन तथा 13 मई को उपकरण वंदनावली का कार्यक्रम होगा।

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य प्रवर श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. पू. मुनि नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा व पूजनीया बहिन म. डॉ. सा. विद्युत्प्रभाश्रीजी म., पू. डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म., पू. डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 16 की पावन निश्रा में यह समारोह आयोजित होगा। सुप्रसिद्ध संगीतकार नरेन्द्र भाई वाणीगोता का अनूठा भक्ति संगीत होगा।

आभूषणों से सजाने से लेकर, आभूषणों के उतारे जाने तक।
रोते हुए संसार मे आने से लेकर, संसार से रुलाते हुए जाने तक।
खुद की परवाह करवाये जाने से लेकर, औरों की परवाह किये जाने तक।
किसी के जीवन मे आनन्द बनने से लेकर, आनन्द के छिन जाने तक।

**जिंदगी में हम वही हासिल करते हैं।**
**जिसका हम लक्ष्य रखते हैं, वही हम जीत सकते हैं।**

**जिंदगी में ऊंचाई हासिल करने के लिए सबसे पहले हमें जो चाहिए उस लक्ष्य की स्पष्टता और दूसरा उसे पाने के लिए जुनून...**

# साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. ठाणा 2 ब्रह्मसर में बिराजमान है। उनकी पावन निश्रा में चितलवाना निवासी श्री लक्ष्मीचंदजी जेठमलजी गांधी परिवार की ओर से जैसलमेर से ब्रह्मसर छहरी पालित पद यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री खिमेल पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में जीर्णोद्धार कृत दादावाडी की प्रतिष्ठा 25 मई 2023 को संपन्न होगी।

0 पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरीश्वरजी म. सा. राजनांदगांव बिराज रहे हैं। वहाँ से विहार कर नागपुर होते हुए तलेगांव पधारेंगे।

0 पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम से विहार कर राजनांदगांव पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 मार्च 2023 को जिनमंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से विहार कर नाचणगांव होते हुए गुजरात पधारेंगे। आपका चातुर्मास पालीताना में होगा।

0 पूज्य गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनि गणिजी म. सा. आदि ठाणा 4 राजनांद गांव बिराज रहे हैं। वे छत्तीसगढ क्षेत्र में विचरण करेंगे। पूज्य विरागमुनिजी म. के घोर तपस्या चल रही है। चातुर्मास बालाघाट में होगा।

0 पूज्य स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 4 चेन्नई में धर्मनाथ जिनमंदिर में बिराजमान है।

0 पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा ने जहाज मंदिर से विहार कर जीरावला तीर्थ में प्रथम पाषाण स्थापना का विधान करके अहमदाबाद पधारें। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् सूरत-पूना की ओर विहार करेंगे।

0 पूज्य गणिवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म. श्री महावीरजी तीर्थ में बिराज रहे हैं। उनका शासन प्रभावक विचरण पल्लीवाल क्षेत्र में हो रहा है।

0 पूज्य उपाध्याय श्री महेन्द्रसागरजी म. पूज्य उपाध्याय श्री मनीषसागरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में गिरनार तीर्थ की 108 यात्रा का भव्य कार्यक्रम चल रहा है। 500 से उपर आराधक यात्रा का परम आनंद प्राप्त कर रहे हैं।

0 पूज्य उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 मालेगांव से विहार कर सूरत पधारेंगे।

0 पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 पालीताना श्री जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं।

0 पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. दुर्ग नगर में पद्मनाभपुर में बिराजमान है।

0 पूज्य मुनि श्री ऋषभसागरजी म. आदि ठाणा 4 कैवल्यधाम तीर्थ में बिराज रहे हैं। पूज्य प्रशान्तसागरजी म. स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

0 पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 स्वास्थ्य कारणों से पालीताना बिराज रहे हैं।

0 पूज्य मरुधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा जयपुर से मालपुरा विहार में हैं। उनका चातुर्मास कोटा में होगा।

0 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा ने जयपुर से बनारस की ओर विहार किया है। उनका कोलकाता पधारने का भाव है।

0 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा पेद्दतुम्बलम् पार्श्वमणि तीर्थ बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा हैदराबाद बिराज रहे हैं। वहाँ से गुंटुर की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। नूतन साध्वीजी म. के योगोद्वहन चल रहे हैं।

0 पूजनीया सा. श्रीसुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. लयस्मिताश्रीजी म. संघमित्राश्रीजी म. दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा रायपुर बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 पालीताना में बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर कुशल वाटिका बिराज रहे हैं। पूजनीया माताजी म. का स्वास्थ्य अनुकूल है। पूजनीया बहिन म. फलोदी, सेतरावा, बालोतरा, जसोल आदि क्षेत्रों की स्पर्शना करते हुए बाडमेर पधार गये हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा कोरबा प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान कर बनारस की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा जहाज मंदिर से विहार कर नोरवा दादावाडी कुशल हेम विहार धाम होते हुए पाली पधार गये हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा नाकोडा तीर्थ में बिराजमान है।

0 पूजनीया साध्वी श्री मृगावती श्रीजी म. आदि ठाणा जयपुर मोतीडुंगरी दादावाडी में बिराजमान है। उनकी सहवर्ती साध्वीजी सुरप्रियाश्रीजी म. के घुटनों की शल्य चिकित्सा हुई है। वे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. नीमच बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा ने अजीमगंज से रायपुर की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा, विरलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा गिरनार तीर्थ में बिराज रहे हैं। साध्वी मंडल नवाणुं यात्रा कर रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने बीकानेर की ओर विहार किया है। चैत्री ओली बीकानेर में होने की संभावना है।

0 पूजनीया साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 रायपुर में बिराज रहे हैं। उनका विचरण छत्तीसगढ में होगा।

0 पूजनीया साध्वी श्री डॉ. संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना बिराज रहे हैं। वहाँ से 17 मार्च को गिरनार तीर्थ के लिये विहार किया है।

0 पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 पालीताना श्री जिनहरिविहार में बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री श्वेतांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 झालरापाटण क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं।

**जो आसानी से मिल जाता है,**
**वो हमेशा तक नहीं रहता,**
**जो हमेशा तक रहता है,**
**वो आसानी से नहीं मिलता।**

**शुरुआत करने के लिए**
**महान होने की जरुरत नहीं है।**
**परंतु महान होने के लिए**
**शुरुआत करने की जरुरत होती है।**

# जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर चाहता था कि मैं बोलने में सबको पीछे छोड दूं। किसी भी व्यक्ति के प्रश्न के उत्तर में ऐसा जवाब दूं कि वह अचरज से भर जाये। और मैं ऐसे सवाल करूँ कि वह मौन हो जाये।

उसने अपने अध्यापक से कहा- सर! मुझे प्रभावी चर्चा करना सिखाओ।

अध्यापक ने पूछा- तुझे किसके साथ चर्चा करनी है!

जटाशंकर बोला- घटाशंकर के साथ!

-कब करनी है?

-अभी! अभी मैं यहाँ से जाऊँगा, वह रास्ते में मिलेगा। तभी मैं उससे चर्चा करूँगा। उससे वार्तालाप करने के लिये और बातचीत में उसे हराने के लिये मैं बहुत उतावला हो रहा हूँ।

अध्यापक ने उसे ज्ञान अर्पण करते हुए कहा- जब वह रास्ते में मिले तो तुम उससे पूछना- कहाँ जा रहे हो?

वह जवाब में कहेगा कि मैं अमुक जगह जा रहा हूँ। तब तुम कहना- तुम नहीं जाते, यह रास्ता जाता है। और वह तुम्हारा जवाब सुनकर सकपका जायेगा। उससे जवाब देते नहीं बनेगा।

यह ज्ञान प्राप्त कर जटाशंकर प्रसन्नता का अनुभव करता हुआ अपने घर की ओर चला। रास्ते में घटाशंकर मिला।

जटाशंकर ने अपने प्रश्न और उत्तरों को अच्छी तरह याद कर लिया। फिर घटाशंकर से पूछा- कहाँ जा रहे हो!

घटाशंकर बोला- जहाँ पांव ले जाय वहाँ!

जटाशंकर को समझ नहीं आया कि अब मैं क्या बोलूं। क्योंकि उसे तो तभी बोलना था, जब घटाशंकर वह जवाब देता जो अध्यापकजी ने बताया था। पर ऐसा तो हुआ नहीं। वह उदास हो गया।

दूसरे दिन अध्यापकजी से सारी घटना सुनाते हुए कहा- अब आप बताओ, मैं क्या जवाब दूं!

अध्यापक ने कहा- यदि वह ऐसा कहे, तो तुझे बोलना चाहिये कि यदि तेरे पाँव कट जाये तो फिर ये पाँव तुझे कहाँ लेकर जायेंगे!

जटाशंकर जवाब की इस भाषा को सुनकर प्रसन्न हो गया। उसने इस जवाब को रट लिया।

घटाशंकर रास्ते में मिला। जटाशंकर ने पूछा- क्या जा रहे हो?

घटाशंकर बोला- हवाऐं ले जायें वहाँ!

जटाशंकर परेशान हो गया। यह तो नया जवाब हो गया। अब मैं क्या बोलूं!

वह तीसरी बार अध्यापक की शरण में गया।

अध्यापक ने उसे समझाते हुए कहा- अरे! इसमें घबराने की क्या बात है! वह हवा की बात करे तो तुम बोल देना कि जब हवा बंद हो तो कहाँ जाओगे? जटाशंकर ने नये जवाब को अपनी स्मृति का हिस्सा बना दिया।

जटाशंकर को रास्ते में घटाशंकर मिल गया। उसने पूछा- कहाँ जा रहे हो?

घटाशंकर बोला- सब्जी लेने के लिये बाजार में!

जटाशंकर परेशान हो गया। यह कैसा आदमी है जो हर बार एक जैसे सवाल का अलग-अलग जवाब देता है। अब मैं जो जवाब रटकर लाता हूँ, वह तो मैं दे ही नहीं पाता और मौन रहना पड जाता है।

उधार ज्ञान कब तक चलेगा! परमात्मा महावीर कहते हैं- अपने दीये खुद बनो। अपनी रोशनी को प्राप्त करो। दूसरों से प्राप्त रोशनी प्रेरणा बन सकती है। पर प्रकाशित होने के लिये तो अपना खुद का दीया प्रकट करना होगा।

श्री महावीरस्वामिने नमः

॥श्री कुंथुनाथाय नमः॥

॥ श्री जिनकुशलसूरिभ्यो नमः॥

श्री स्तंभनपार्श्वनाथाय नमः

हुण्डिया परिवार

गुन्दुर नगरे प्रतिष्ठा-दीक्षा महोत्सव

ता : 6-5-23 से 11-5-23

# श्री गुण्टुर नगर में हुण्डिया परिवार द्वारा निर्मित

# श्री कुंथुनाथ जिनमंदिर एवं

## श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी की

## अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं

## सुश्री अंकिता श्रीश्रीमाल के

## विरति वरणोत्सव प्रसंगे

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति

आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

## सकल श्री संघ को

## भावभरा सुस्वागत

# आमंत्रण

प्रेरणा

पूजनीया धवल यशस्वी

साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.

**महोत्सव प्रारंभ** वि.सं. 2080 ज्येष्ठ वदि 1, शनिवार, ता.6 मई 2023

**प्रतिष्ठा दिवस** वि.सं. 2080 ज्येष्ठ वदि 6, गुरुवार, ता.11 मई 2023

मुमुक्षु अंकिता श्रीश्रीमाल

**निवेदक**

**मूलचन्द छगनराज सुखराज दलपतराज अशोक कुमार समस्त हुण्डिया परिवार**

मोकलसर-गुण्टुर-जोधपुर-इन्दौर-USA

सम्पर्क सूत्र : 88290 17946, 79990 74532

**प्रतिष्ठा स्थल**

श्री दादा कुंथुनाथ जैन मंदिर एवं दादावाड़ी

3 / 6 विद्यानगर, गुंटुर

**प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल**

सिद्धार्थ कन्वेंशन हॉल (हस्तिनापुर नगरी)

रिंग रोड़, गुंटुर

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

93145 10196, 96026 23456

श्री पार्श्वनाथाय नमः

# रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

## जैन परिवारों के वैवाहिक रिश्तों की खुशियों का मंडप

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरतंर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते है। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हों अर्थात् प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते है। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध है। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आईपीएस हो या राजनीतिक, समाजसेवा के क्षेत्र से हो देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र, हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है । संकोच नहीं , सम्पर्क करें

**पद्मचंद जैन 9314510196**

प्रोफेशनल, सी.ए., पायलट, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैनिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखें वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

**जैन-वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

# इंटरनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, एपी अपार्टमेंट, खरबूजा मंडी, वैभव लॉन के सामने, एमडी रोड़, जयपुर-04

## 93145 10196, 96026 23456

सेवा के सरोकार **शिक्षा, छात्रवृत्ति, चिकित्सा, रोजगार, विधवा पेंशन**

सभी साधर्मिक जैन परिवारों के आवेदकों की सभी जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।


**श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,**
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर ( राजस्थान )
फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com



श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि जालोर ( राज. ) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408